चकमक

मार्च, 2002

बाल विज्ञान पत्रिका

रु. 10.00



डाक टिकट की कहानी



गुरुप्रीत वृष्टि, दूसरी, देहरादून, उत्तराखंड



मयंक, भोपाल, म.प्र.

एकलव्य का प्रकाशन

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका







एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात . . .

अक्सर मुझे बच्चों की जो चिट्ठियाँ मिलती हैं, उनमें वो कहते हैं कि चकमक में और भी खेल, प्रयोग, बनाने वाली चीज़ें दी जाएँ। हम हर अंक में कोशिश करते हैं कि खूब सारी ऐसी गतिविधियाँ दें जिन्हें करने में तुम्हें मज़ा आए।

खैर, यह बताओ कि अगर स्कूल की पढ़ाई भी ऐसी ही हो कि उसमें बहुत सारे प्रयोग अपने हाथों से करने को मिले, बाग-बगीचे में घूमते हुए पेड़-पौधों के बारे में जाना जाए, तो कैसा रहेगा। तुम में से बहुत सारे बच्चे शायद यह जानते हो कि चकमक, एकलव्य नामक संस्था निकालती है। एकलव्य ने म. प्र. के शिक्षा विभाग की मदद से यहाँ के कई सारे स्कूलों में इसी तरह विज्ञान पढ़ाने का एक नया तरीका लागू करने की कोशिश की है। काम को शुरू तो बहुत पहले दो अन्य संस्थाओं – मित्र मंडल केन्द्र तथा किशोर भारती ने किया था। पर 1982 से इसको आगे ले जाने का काम एकलव्य करता रहा है। चूँकि यह तरीका होशंगाबाद में शुरू किया गया था, इसलिए इसका नाम है होशंगाबाद विज्ञान।

तो इस तरह म. प्र. के लगभग 1000 स्कूलों के बच्चे विज्ञान की पढ़ाई किताबों से रटकर नहीं, बल्कि अपने हाथों से प्रयोग करके, अपने आस-पास के पर्यावरण को देख-समझकर करते हैं। लेकिन पिछले दिनों कुछ लोगों ने यह कहना शुरू किया कि यह विज्ञान बेकार है। उनका कहना है कि इसमें बच्चों को बाहर जाकर पत्तियाँ वगैरह इकट्ठा करना पड़ता है। इससे बच्चों को बहुत असुविधा होती है। तो इसलिए इस तरह की पढ़ाई को बन्द कर देना चाहिए। अजीब बात यह है कि इसके लिए वो कोई शैक्षिक मुद्दा नहीं उठा रहे हैं। न ही वे शैक्षिक पहलुओं पर बात करने को तैयार हैं।

तुम लोगों को क्या लगता है? क्या स्कूल की पढ़ाई सिर्फ किताबों के माध्यम से होनी चाहिए। या उसमें प्रयोग करने, आस-पास की घटनाओं को देख–परखकर समझने, सवाल पूछने और सवालों के जवाब ढूँढने आदि की भी जगह होना चाहिए? तुम अपनी राय हमें लिखकर भेजना।

● चकमक

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष-17 अंक-9
मार्च, 2002

सम्पादन
विनोद रायना
कविता सुरेश
टुलटुल विश्वास
सुशील शुक्ल

सहयोग
राकेश खत्री

विज्ञान परामर्श
सुशील जोशी

वितरण
कमल सिंह
मनोज निगम
अशोक रोकड़े

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता –

एकलव्य
ई-7/453 एच.आई.जी.
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल - 462 016
(म. प्र.)
फोन : 463380

कवर का काग़ज़ : यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

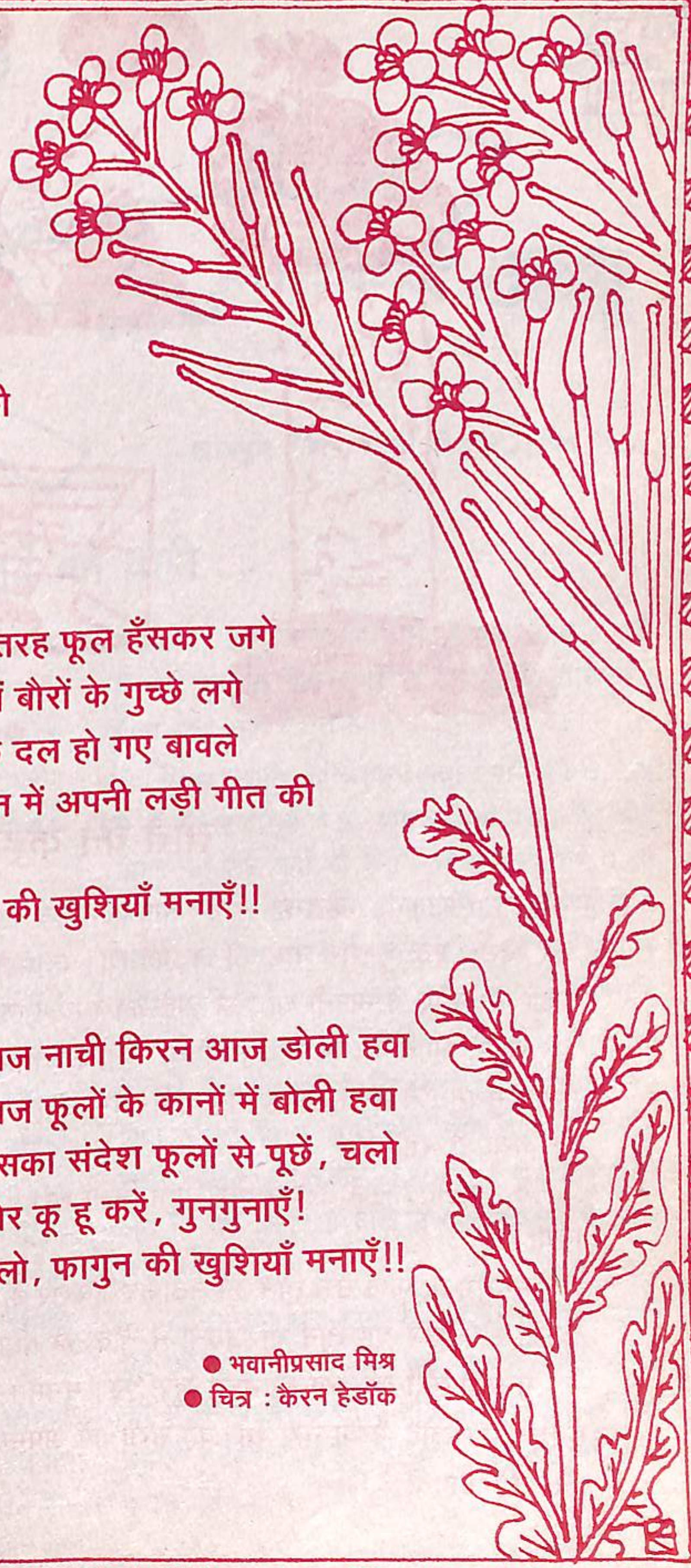
एक प्रति :	10.00 रुपए
छमाही :	50.00 रुपए
वार्षिक :	100.00 रुपए
दो साल :	180.00 रुपए
तीन साल :	250.00 रुपए
आजीवन :	1000.00 रुपए

सभी में डाक खर्च हम देंगे।

चंदा, मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 15.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

फागुन का गीत

चलो, फागुन की खुशियाँ मनाएँ!
आज पीले हैं सरसों के खेत, लो;
आज किरनें हैं कंचन समेत, लो;
आज कोयल बहन हो गई बावली
उसकी कू हू में अपनी लड़ी गीत की
हम मिलाएँ!
चलो, फागुन की खुशियाँ मनाएँ!!



आज अपनी तरह फूल हँसकर जगे
आज आमों में बौरों के गुच्छे लगे
आज भौरों के दल हो गए बावले
उनकी गुनगुन में अपनी लड़ी गीत की
हम मिलाएँ!
चलो, फागुन की खुशियाँ मनाएँ!!



आज नाची किरन आज डोली हवा
आज फूलों के कानों में बोली हवा
उसका संदेश फूलों से पूछें, चलो
और कू हू करें, गुनगुनाएँ!
चलो, फागुन की खुशियाँ मनाएँ!!

● भवानीप्रसाद मिश्र
● चित्र : कैरन हेडॉक



● आरती श्रीवास्तव, पाँचवीं, ऊँचिया, दतिया, म. प्र.

तोते की कहानी

एक तोता था। वह बहुत ही अच्छा था। एक दिन उसे एक कौए ने अपनी चोंच से घायल कर दिया। एक मुनमुन नाम की लड़की थी। वह मेले में जा रही थी। तभी उसने अचानक देखा कि कौए ने अपनी चोंच से तोते को घायल कर दिया। उसे वह अपने घर ले गई।

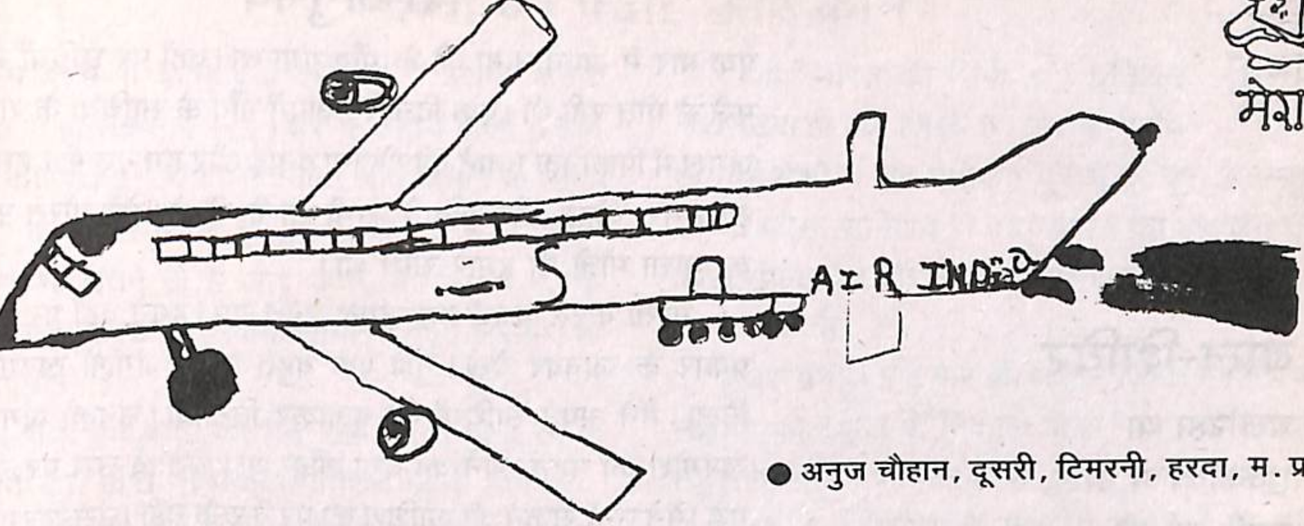
उसने अपने घर ले जाकर अपनी मम्मी को बताया। उसकी मम्मी ने उस तोते को फेंक दिया। मुनमुन ने देखा तो वह रोने लगी। तभी उसके पापा आए, उन्होंने पूछा, ''मुनमुन बेटी तुम क्यों रो रही हो।''

वह बोली, ''मुझे मेले में एक तोता मिला था। मैं उसे घर ले आई। उसे मम्मी ने फेंक दिया।''

मुनमुन के पापा उस तोते को उठाकर डॉक्टर के पास ले गए। और उसकी मरहम पट्टी करवा दी। फिर वह तीन चार दिनों में ठीक हो गया।

मुनमुन तोते को देखकर बहुत खुश हुई। मुनमन ने उस तोते का नाम रखा राजा भैय्या। मुनमुन का कोई भैय्या नहीं था। वह उसी को अपना भैय्या मानने लगी थी। बस यही उस तोते की कहानी है।

● राखीपाल, पाँचवीं, देवास, म. प्र.



● अनुज चौहान, दूसरी, टिमरनी, हरदा, म. प्र.

गुर्दे की चोरी

अभी तक आपने रुपए पैसे, सोना, चाँदी इत्यादि की चोरी सुनी है। किन्तु अपने शरीर के भीतर के भाग के किसी मानवीय अंग को चुरा ले तो आश्चर्यजनक बात होगी। मगर भारत में ऐसा भी होता है कि शरीर के किसी मानव अंग की चोरी हो जाती है। है तो बड़े आश्चर्य की बात मगर ऐसा भी होता है।

गुर्दा हमारे शरीर में मुत्राशयतंत्र में महत्वपूर्ण अंग है। गुर्दे सेम के बीज की आकृति के होते हैं। और संख्या दो होती है। दोनों काम करते हैं। यदि एक गुर्दा खराब हो जाए तो दोनों का काम एक गुर्दे को ही करना पड़ता है। दोनों गुर्दे खराब हो जाएँ तो आदमी ज़िन्दा नहीं रह सकता है। इसीलिए जिसके दोनों गुर्दे खराब हो जाते हैं, वह बीमार किसी स्वस्थ व्यक्ति का एक गुर्दा लेकर जीवन के खतरे को टाल सकता है। अपने किसी स्वस्थ रिश्तेदार से, जो उसको गुर्दा देना चाहे तो वह ले सकता है। और वह अपने शरीर में लगवा सकता है।

कई बार ऐसा होता है कि रिश्तेदार के अलावा दूसरे लोगों से गुर्दे लिए जाते हैं। गरीब जरूरतमंद लोग अपना एक गुर्दा बीमार अमीर को बेच देते हैं। उपलब्ध जानकारी में एक गुर्दा 70–80 हजार रु. में बिकता है। दक्षिण भारत में तो कोई गाँव है, जो किडनी पुरम के नाम से प्रसिद्ध है। वहाँ के अधिकांश लोग यही काम करते हैं।

स्वस्थ व्यक्ति जो अपना गुर्दा दूसरे को दे देता है तो उसे एक गुर्दे से ही काम चलाना पड़ता है। और अगर वह एक गुर्दा भी काम करना बन्द कर दे तो उसका जीवन खतरे में पड़ जाता है। मानव जीवन के खतरे को बन्द करने के लिए और गुर्दे का व्यापार बन्द करने के लिए सरकार ने यह कानून बनाया है कि गुर्दे सिर्फ अपने करीबी रिश्तेदार को ही दे सकते हैं। गुर्दे मँहगा बिकने से और रिश्तेदार का कानून बन जाने से गुर्दे की भी चोरी होने लगी है। किसी गरीब स्वस्थ व्यक्ति को बहला-फुसलाकर उससे गुर्दे ले लेते हैं। गुर्दे की ऐसी चोरी में कई डॉक्टर भी फँस चुके हैं।

पुलिस को अब लोगों की संपत्ति के साथ-साथ गुर्दे की चोरी का भी काम बढ़ गया है। तथा मनुष्य को अपनी संपत्ति के साथ-साथ अपने शरीर के अंगों जिसमें गुर्दा शामिल है, कि चोरी न हो ऐसे उपाय भी करने पड़ेंगे।

● शीतल वाधवानी, आठवीं, उज्जैन, म. प्र.



बाल-शिविर

चल रहा था
एकलव्य में खेल,
लगी हुई थी
बच्चों की रेलम् पेल।
लगा हुआ था
जैसे कोई मेला,
मुखौटे बनाने का
खेल सबने खेला।
दिनेश भाई को
था सबका ध्यान
शैतानों के भी
न खींचे कान।
करने लगे
जब बड़ा बहुत शोर।
मोटू अंकल ने
डाँटकर किया उन्हें बोर।
डाँट भी थी
उनकी दुलार की,
समझ गए सब
दृष्टि उनकी प्यार की।
आ रहा था
मज़ा सबको,
मुझको, उसको
सब बच्चों को।

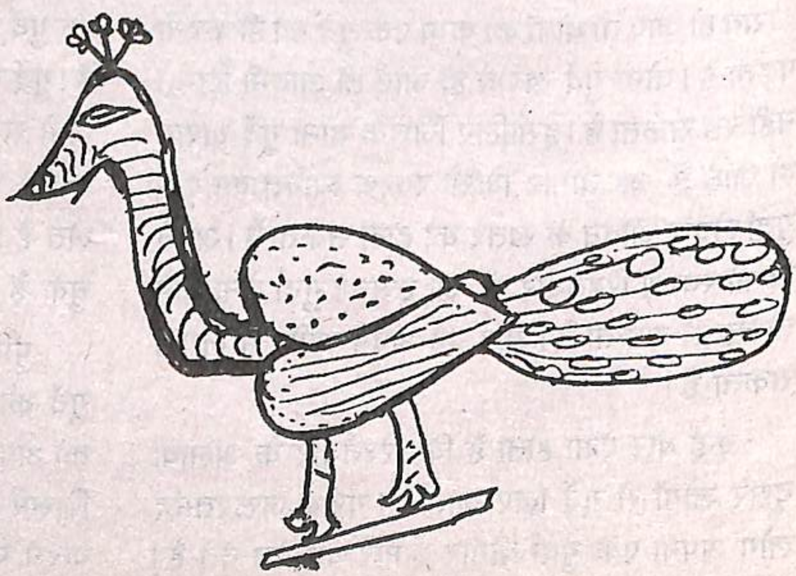
● विशाल 'विभास'

मेरा अनुभव

एक बार मैं अपने मामा जी के गाँव गया था। वहाँ पर छुट्टियाँ बड़े मजे से बीत रही थीं। एक दिन मैंने अपने गाँव के साथियों के साथ जंगल में पिकनिक मनाने की योजना बनाई और हम गए भी। हमारे साथ मेरा दोस्त और गाँव के सभी साथी भी थे। मेरे दोस्त राम का कुत्ता मोती भी हमारे साथ था।

मस्ती करते-करते हम जंगल पहुँच गए। हमने वहाँ पर कई प्रकार के जानवर देखे। मुझे एक बहुत प्यारा जंगली खरगोश मिला। मैंने अपने साथियों को बुलाकर दिखाया। उनको जंगली खरगोश का मटन खाने का बड़ा शौक था। अतः वे उस पर झूम पड़े। मैंने उन्हें रोकने की कोशिश की पर वे रुके नहीं। उस खरगोश को मारने के लिए दौड़ पड़े। खरगोश उन सबसे बचकर वहीं एक झाड़ी में छुप गया। उनमें से एक मित्र ने खरगोश को झाड़ियों के पीछे देख लिया और उसे चारों तरफ से घेरकर पत्थर बरसाने लगे। खरगोश खून से लथपथ होकर घायल हो गया। इतने में मैं वहाँ पर आ गया। मैंने उन्हें रोका और खरगोश को उठाकर पानी पिलाने लगा। लेकिन खरगोश मर चुका था। मुझे बहुत रोना आ रहा था। मैंने वहीं गड्ढा खोदकर खरगोश को गाड़ दिया। मेरा गुस्सा देखकर सभी साथियों ने कभी ऐसा न करने की कसम खाई। जब में उस दिन को याद करता हूँ तो मुझे रोना आ जाता है।

● संजय वाघेला, नवीं, देवास, म. प्र.



● रामगोपाल लोधी, आठवीं, मड़देवरा, छतरपुर, म. प्र.



बच्चों की पढ़ाई और काम

लोग बच्चों से काम क्यों करवाते हैं इसके अनेक कारण हो सकते हैं – 1) घर में कमाने वाला न होने के कारण। 2) ज्यादा से ज्यादा आय कमाने के लिए।

काम कराने का कारण हो सकता है कि खाने वाले भी उतने ही हैं और अगर बच्चे काम करके कमाएँगे तो उनका खाना कमाना दोनों बराबर हो जाएगा।

क्या इन बच्चों का मन नहीं करता होगा स्कूल जाने का? देखें तो ज़्यादा प्रतिशत हाँ के होंगे।

कई बार घरों में पिता नहीं होते इसलिए कमाने का सारा भार बच्चों पर आता हैं जिससे बच्चे अधिकतर स्कूल नहीं जा पाते। कई बार आर्थिक स्थिति बहुत गिरी हुई होती है। आजकल स्कूलों में पैसा ज्यादा माँगा जाता है जिससे कई बच्चे स्कूल नहीं जा पाते।

हर बच्चे के मन में पढ़ाई या ज्ञान विज्ञान की बातें आती रहती हैं। हम अपनी ज़िंदगी में ऐसे कई उदाहरण सुनते हैं जैसे कि उस बच्चे ने पढ़ाई और काम दोनों किया। ऐसे हमारे पास अनगिनत उदाहरण हैं। हर बच्चे में कोई न कोई हुनर होता है। जैसे कि लगभग एक साल पहले अखबार में खबर आई थी कि एक बच्चा जो होटल में बर्तन माँजने का काम करता था। उसके राष्ट्रीय परीक्षा में डेढ़ सौ में से 148 नम्बर आए, जो सबसे अधिक थे। इससे पढ़ाई के बारे में लगन की बातें पता चलती हैं।

हर बच्चे को पढ़ने का अधिकार होना ही चाहिए। संविधान में यह लिखा हुआ है कि हर 6 से 14 वर्ष के बच्चों को निशुल्क शिक्षा मिलेगी। आजकल हम हर दूसरे दिन एक नए विद्यालय का नाम सुनते हैं और उसकी फीस के बारे में भी सुनते हैं। कई अंग्रेजी स्कूलों ने तो फीस के नाम पर लूट मचा रखी है।

क्या इससे हर बच्चे को पढ़ने का अधिकार मिल सकता है? क्या यह संविधान का उल्लंघन नहीं है?

आज भारत की सिर्फ 52 प्रतिशत जनसंख्या ही पढ़ी लिखी है। जबकि यूरोप के कई देशों में यह प्रतिशत पूरे में से पूरा है। बहुत ज्यादा फीस, डोनेशन से क्या भारत का हर जन पढ़ लिख सकता है। और तो और साक्षरता में हम अफ्रीका से भी पीछे हैं।

जिस प्रकार इस बार की बात में लिखा है कि एक लड़की को स्कूल से निकाल दिया गया क्योंकि वह स्कूल के बाद काम करती थी। ऐसा करना बिल्कुल गलत था। मेरा विश्वास के साथ यह मानना है कि वह जिस स्कूल में पढ़ती होगी वह पब्लिक स्कूल होगा। पब्लिक स्कूल के बच्चों के साथ यह बात बहुत बार होती है और उन्हें स्कूल से निकाल दिया जाता है।

कुछ दिनों पहले मैंने एक पत्रिका में पढ़ा था कि एक आदमी कुछ बच्चों को बहलाकर गाँव से शहर ले आया। वह बच्चों से एक कमरे में खूब काम करवाता था और मार पीटकर उनका शोषण भी करता था। वह बच्चों को सिर्फ पाँच रुपए रोज देता था। ऐसे बच्चों का पढ़ना तो दूर ठीक से जीना भी नहीं हो सकता। यह आम घटना है। अभी भी हजारों बच्चे किसी छोटे कुटीर उद्योग में दबे पड़े हैं। दूरदर्शन भी बच्चों के प्रति शोषण के बारे में खूब टेलीफिल्म दिखाते हैं। जैसे कि चूड़ियाँ बेचने वाले आदि।

इसका मतलब यह नहीं कि हमें काम नहीं करना चाहिए। पहले बच्चे पढ़ाई के साथ-साथ घर के काम में हाथ बँटाते थे। जैसे खेती के काम, भैंस चराना आदि। मैं एक बड़े शहर में रहता हूँ और सारे काम खुद करता हूँ जैसे पालिश करना, कपड़े धोना, इस्त्री करना आदि। हर बच्चे को घर का और अपना काम करना चाहिए।

शिक्षा का मतलब सिर्फ पढ़ाई नहीं बल्कि काम भी है। तभी हम अपने पैरों पर खड़े हो सकते हैं और अच्छे नागरिक बन सकते हैं।

● अचिन्त्य शर्मा, दिल्ली

नानी के घर

मेरी नानी जबलपुर में रहती हैं। पिछली गर्मी में जब मैं नानी के यहाँ आई थी तो मेरी नानी के यहाँ एक कुत्ता बँधा मिला। मैं जैसे ही अन्दर गई तो वह मुझे पहचाना नहीं और भौंकने लगा। उसे एक अंकल जी ने पाल रखा था।

एक दिन मेरी मौसी ने उसे खिलाने के लिए बुला लिया। वो अंकल जी फिर उस कुत्ते को भूल गए। फिर मेरी नानी ने उसे पाल लिया। पहले जब मैं गई तो वह मुझे भौंकने लगा और बाद में मुझसे बहुत घुलमिल गया था। वह मेरे साथ खेलता था। रात को सब सो जाते। फिर सुबह होती मेरी नानी पूजा करने के लिए उठती तो वह मेरी नानी के साथ 5 बजे उठ जाता था। वह 7 बजे सबके पास जाता और सबको ऊधम करके उठा देता।

मैं देवास आने लगी तो मेरी आँखों में आँसू आने लगे। फिर वह अक्टूबर में मर गया। क्योंकि उसके एक पाँव की हड्डी खराब थी। डॉक्टर ने बताया था।

● अमृता दुबे, पाँचवीं, देवास, म. प्र.

काली कोयल

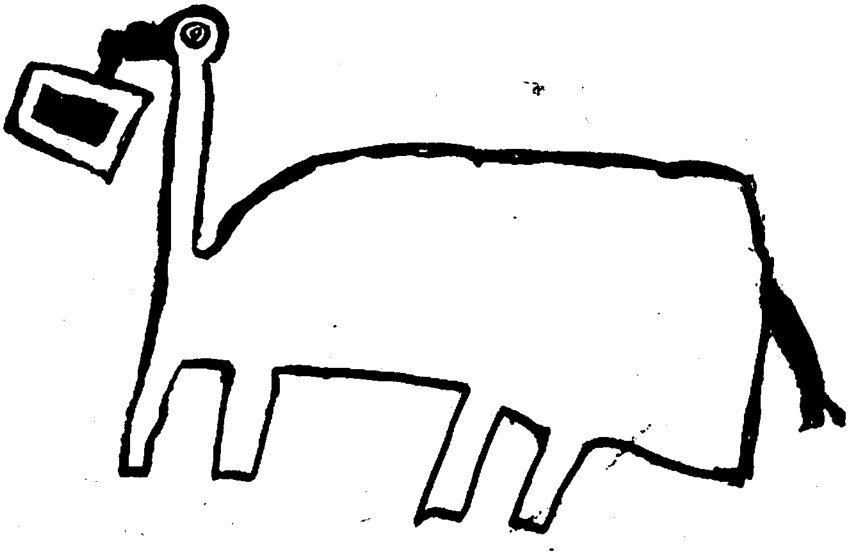
कोयल काली होती है
मीठा गीत सुनाती है
पर दिखाई नहीं देती है
शायद किसी से डरती है
अपने मीठे स्वर के मोह में
हमको मोह लेती है।

छोटे-छोटे पैरों वाली,
छोटे-छोटे पंखों वाली
नाच-नाचकर खुशी मनाती,
अपने स्वर में है मतवाली।

हाथ न किसी के आने वाली,
ऊँचे गगन में उड़ने वाली,
प्यारी-प्यारी काली-काली,
हमको नाच नचाने वाली।

जब मिल जाए काला कौआ,
कोयल कर ले उनसे तौबा
चुप होकर वह चल देती है
आगे बढ़कर हँस लेती है।
कोयल प्यारी कोयल,
कोयल प्यारी, कोयल

● दिनेश मांडवी, आमूपुरा, होशंगाबाद, म. प्र.



● आमिर, दूसरी, भोपाल, म. प्र.





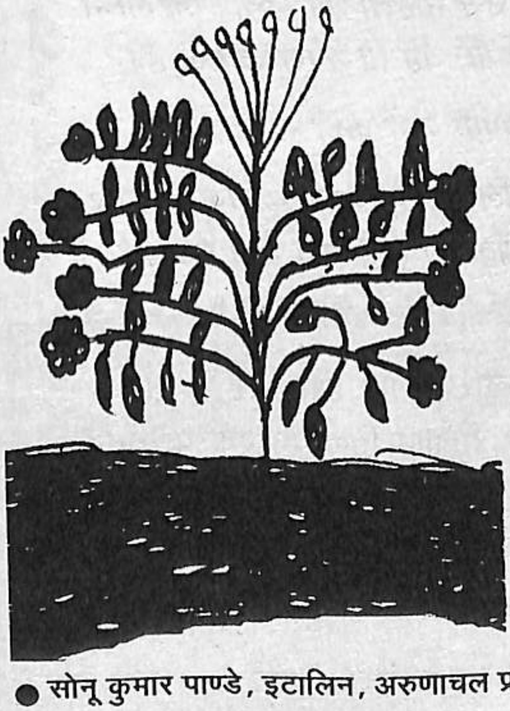
● गौतम कुमार, सातवीं, छोटेडोंगर,

दुर्घटना

हमारे घर के पास में एक लड़की रहती है। वह छोटी और बड़ी प्यारी लड़की है। उसे एक दिन मैं बाजार ले गई। मैं जब बाजार जा रही थी तो उस लड़की की माँ ने कहा – जा वो तबस्सुम बाजार जा रही है, जा तू भी चली जा।

बाजार में अचानक वह मेरी साईकिल पे से गिर गई। जैसे मैंने उसे देखा, ट्रेक्टर के नीचे पड़ी हुई थी। वहाँ पर बहुत सारे इन्सान खड़े हुए थे। जब मैंने जोर-जोर से सब इन्सानों को आवाज लगाई। किसी ने भी आकर उसे नहीं बचाया। मैं तो रो रही थी मगर मेरे पास खड़ी एक बूढ़ी औरत ने मुझे तसल्ली दी – अरे बेटा काय को रोती है, यह कोई तेरी सगी बहन तो नहीं थी। मगर मुझे उस बूढ़ी औरत की वह बात सुनकर और ज़्यादा दुख हुआ।

जब उस लड़की के माँ-बाप को पता चला तो उन्होंने कहा – ये लड़की खूनी है। उस बात को सुनकर मेरे मम्मी-पापा को भी दुख हुआ। यह मेरी अपनी घटना है। ये किसी पर भी घट सकती है। इसीलिए मैंने यह घटना लिखी।



● सोनू कुमार पाण्डे, इटालिन, अरुणाचल प्रदेश

● तबस्सुम हैदर खाँ, आठवीं, देवाबाग, देवास, म.प्र.

डाक टिकट की कहानी

एक जगह से दूसरी जगह संदेश भेजना बहुत पहले से होता रहा है। दुनिया में लगभग सभी जगह चिट्ठियाँ लाने-ले-जाने का काम होता था। जब तक डाक टिकट शुरू नहीं हुए थे, तब तक चिट्ठियों को लाने-ले-जाने का खर्च चिट्ठी भेजने वाले को पेशगी देना पड़ता था। कभी-कभी चिट्ठी पाने वाले को भी खर्च देना पड़ता था। चिट्ठी लाने या ले जाने का खर्चा कितना होगा, यह दूरी के हिसाब से तय होता था। इस खर्चे को महसूल भी कहा जाता है।

इन चिट्ठियों पर कई तरह की मुहरें लगाई जाती थीं। किसी पर महसूल प्राप्ति की मुहर लगती थी, तो किसी पर महसूल अप्राप्ति की। सन् 1835 में इंग्लैंड में किए गए एक अध्ययन से पता चला कि डाक महसूल की दरें तो बढ़ी हैं, लेकिन उससे होने वाली आय कम हो गई है। इसका कारण यह था कि बहुत सारी चिट्ठियाँ बिना महसूल दिए भेजी जाती हैं और उनमें से कई चिट्ठियों को पाने वाले लौटा देते हैं। यह कुछ इस तरह होता था –

एक डाकिया किसी महिला के लिए एक पत्र लेकर उसके घर गया। महिला ने पत्र लिया, उसे उलट-पुलटकर देखा और वापस कर दिया। डाकिया पत्र लेकर वापस चला गया। दूर से एक आदमी यह देख रहा था। उसने समझा कि महिला के पास पत्र लाने वाले को देने के लिए रुपए नहीं हैं। उस व्यक्ति ने डाकिये को रुपए देकर वह पत्र ले लिया। और ले जाकर उस महिला को दिया। महिला ने उस आदमी से कहा, 'आपने बेकार ही खर्चा किया, यह तो कोरा कागज़ है।'

उस आदमी ने पूछा, 'यह कोरा कागज़ आपके नाम कहाँ से आया?'

महिला बोली, 'मेरा बेटा मुझे इसी तरह पत्र लिखता है। कोरा कागज़ देखकर मैं समझ लेती हूँ कि वह ठीक है। इस तरह हमें डाक का खर्च नहीं देना पड़ता।'

इंग्लैंड में डाक महसूल की ऊँची दरों के कारण लोग इस तरह के तरीके अपनाते थे। 1837 में 'डाकघर-सुधार' नामक रोलैण्ड हिल की एक पुस्तिका प्रकाशित हुई। उसमें कई सुझाव थे जैसे – डाक महसूल कम हो, डाक-दर एक सी हो, दूरी का उस पर कोई असर न पड़े और डाक महसूल पेशगी ले लेना अनिवार्य कर दिया जाए।

उन्होंने सुझाव दिया कि टिकट छपा हुआ लिफाफा जारी किया जाना चाहिए। जो व्यक्ति अपने लिफाफे काम में लाना चाहें वे छोटी चिपकनी चिप्पियाँ खरीदकर अपनी चिट्ठियों पर लगा सकते हैं।

ब्रिटेन में 1840 में यह नियम लागू किया गया कि आधा औंस तक के वज़न की चिट्ठी ले जाने का खर्च एक पेंस लिया जाए। पत्र कितनी दूर जाएगा इससे डाक महसूल पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा। खर्च पहले लेने के लिए चिट्ठियों पर चिप्पियाँ चिपकाई जाएँगी।

डाक टिकटों का प्रयोग कैसे और किस तरह किया जाए, इसकी जानकारी के लिए एक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। डाक टिकिट के लिए सुझाव भेजने वालों को नीचे लिखी बातें ध्यान में रखना थीं –

1. टिकट को उंगलियों से पकड़ा जा सके।
2. जाली टिकट न बनाया जा सके।
3. डाकघर में टिकट की आसानी से परीक्षा हो सके।
4. डाक टिकटों के उत्पादन और प्रसार में होने वाले खर्च का अंदाज़।

इस प्रतियोगिता में 2,600 से अधिक लोगों ने अपने सुझाव भेजे। चार व्यक्तियों को 100-100 पौण्ड (तब के 2,300 रु.) के इनाम दिए गए पर जो 'एसे' (डाक टिकट के चित्र) प्राप्त हुए उनमें से एक का भी प्रयोग नहीं हुआ।

अन्त में रोलैण्ड हिल और परकिंग्स, बेकन एण्ड कम्पनी के बीच लिखा-पढ़ी के बाद जारी हुए पहले टिकट का नमूना तय हुआ। दुनिया के पहले डाक टिकट 'पैनी ब्लैक' (काला पैसा) का चलन 6 मई 1840 से जारी हुआ।

ब्रिटेन में जब डाक टिकट चलने का प्रयास सफल हुआ, तब अन्य देशों में भी डाक टिकट जारी होने लगे। डाक टिकट जारी करने वाला दूसरा देश ब्राज़ील था (1843)। सन् 1850 तक तो कई देश अपने डाक टिकट जारी करने लगे।



सिंह और ताड़ वृक्ष
भारत के लिए पहला आम टिकट



भारत की राष्ट्रीय
डाक-टिकट प्रदर्शनी 1970



21 वीं अंतर्राष्ट्रीय
भौगोलिक कांग्रेस 1968



संयुक्त राष्ट्र – 25 वीं
जयंती भारत

भारत में डाक टिकट

भारत में 1852 में सिंध प्रांत के लिए कागज़ के डाक टिकटों का चलन शुरू हुआ। वे टिकट 'सिंध डाक' के नाम से प्रसिद्ध हैं। वे भारत के ही नहीं, एशिया के भी पहले डाक टिकट थे। टिकट के डिज़ाइन में बीच में ईस्ट इंडिया कंपनी के चौड़े तीर का निशान था। टिकट पर कई रंगों के उभरे हुए डिज़ाइन थे। पहले सिंदूरी रंग के टिकट छापे गए थे। वे बहुत कम समय तक चले क्योंकि उनका कागज जल्दी फट जाता था। बाद में सफेद टिकट जारी हुए। सफेद कागज़ पर टिकट का उभार साफ नहीं आता था। अंत में सफेद कागज़ पर नीले उभार के टिकट छापे गए।



गांधी शताब्दी
1869–1969



अब्राहम लिंकन
1809–1865



अंतर्राष्ट्रीय रेलवे संघ
1922–1972

'सिंध डाक' के बाद सारे भारत के लिए आम टिकट जारी हुए। प्रथम टिकट पर 'शेर और ताड़ वृक्ष' का चित्र छपा था। यह डिज़ाइन कलकत्ता टकसाल के कर्नल फोरबेस ने तैयार किया। मामूली मशीनरी होने के कारण वे अधिक मात्रा में टिकट नहीं छाप सके। इसलिए उनका डिजाइन काम में नहीं आया।

इस परीक्षण में डिप्टी जनरल कैप्टल थूलियर ने लिथोग्राफी से डाक टिकटों को छापने का काम हाथ में लिया। सितम्बर 1854 में उन्होंने भारत के प्रथम डाक टिकट छाप दिए। एक टिकट आधे आने (तीन पैसे) का था और उसका रंग नीला था। उस पर महारानी विक्टोरिया का सिर अंकित था। बाद में एक आन, दो आने और चार आने के टिकट भी छापे गए।

आधे आने कीमत के नीले टिकट छापने से पहले उसी मूल्य के लाल टिकटों की 900 शीटें छापी गईं थीं। उन लाल टिकटों पर किनारे के मेहराबों का स्वरूप कुछ अलग था। बाहर से आने वाली सिंदूरी स्याही के खत्म हो जाने के कारण यह लाल टिकट अधिक न छापे जा सके। उन टिकटों की छपाई बेकार रही। इसलिए उन सबको नष्ट कर दिया गया। उस लाल टिकट के नमूने की एक प्रति हमारे राष्ट्रीय डाक टिकट संग्रहालय (कलकत्ता) में सुरक्षित है। आधे आने कीमत वाले ये लाल टिकट $9\frac{1}{2}$ आर्चेस (साढ़े नौ मेहराब) के नाम से मशहूर हैं। कैप्टन थूलियर ने जो टिकट छापे थे, उन पर पीछे गोंद नहीं थी, और टिकटों को अलग-अलग करने के लिए उन में छेद भी नहीं थे।

भारतीय टिकटों को बाद में लंदन की फर्म टामड डि ला रो एण्ड कम्पनी ने 1856 से 1926 तक छापा। शासक के बदलने पर टिकटों का डिज़ाइन बदल

दिया जाता था। इस प्रकार सब भारतीय टिकटों पर बारी-बारी से महारानी विक्टोरिया, एडवर्ड सप्तम, जॉर्ज पंचम और जॉर्ज षष्टम की छवि अंकित थी। अलग-अलग मूल्य के डाक टिकट अलग-अलग रंग में छापे जाते थे। 1926 में इंडिया सिक्यूरिटी प्रेस की स्थापना नासिक में हुई और डाक टिकट छापने का दायित्व उस प्रेस को सौंप दिया गया।

1931 में पहली बार भारत में चित्रमय टिकट जारी किए गए थे। उन टिकटों पर नई दिल्ली के अनेक चित्र थे। बाद में जॉर्ज पंचम की रजत जयंती (1935) के अवसर पर स्मारक टिकट जारी हुए। 1937 में डाक ले जाने के विभिन्न तरीकों को दिखाने वाले टिकट जारी किए गए। द्वितीय विश्वयुद्ध के खत्म होने की याद में चार विशेष टिकट 1946 में जारी किए गए थे।

स्वतंत्रता मिलने के बाद, भारत में अनेक टिकट जारी किए गए। इन टिकटों पर भारतीय जीवन और संस्कृति की विभिन्न झाँकियाँ दिखलाई गई हैं। इनमें हमारे वन्य जीवन, पंचवर्षीय योजना सम्बंधी विषय, बच्चों से सम्बंधित सामाजिक और शैक्षणिक विषय, ऐतिहासिक घटनाएँ, एवरेस्ट विजय आदि को चित्रित किया जा चुका है। राष्ट्रीय नेताओं और स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों, दार्शनिकों, विचारकों, शिक्षाविदों, वैज्ञानिकों, लेखकों और कलाकारों को भी इसी प्रकार सम्मानित किया गया है। उनके सम्मान में अनेक डाक-टिकट जारी किए जा चुके हैं।

टिकटों को अधिक आकर्षक और रंग-बिरंगे बनाने के लिए 1972 में, नासिक सिक्यूरिटी प्रेस में एक बहुरंगी छपाई की मशीन लगा दी गई है। इसके बाद भारतीय मुखौटों, लघुचित्रों, नृत्यों आदि की रंगीन टिकटमालाएँ भी प्रकाशित की जा रही हैं।

राष्ट्र मंडल देशों में भारत ही पहला देश था जिसने हवाई डाक के विशेष टिकट जारी किए थे। भारत ने ही सबसे पहले विमान से डाक भेजी थी। 18 फरवरी 1911 को 6,500 चिट्ठियाँ विमान द्वारा इलाहाबाद से नैनी भेजी गई थी। * * *



एक लाख डाकघर

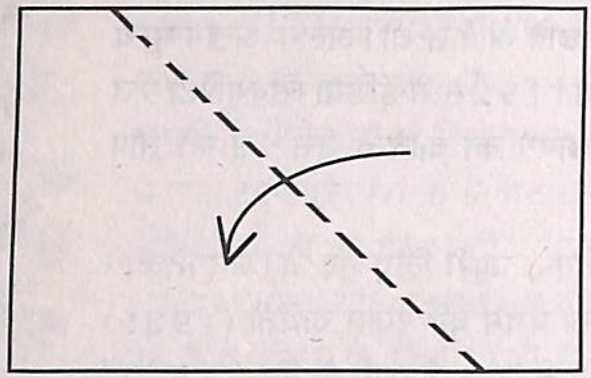


चाय चयन

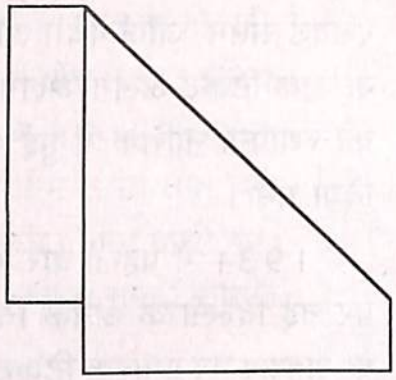

मेरी क्यूरी 1867–1934


रानी लक्ष्मीबाई 1857–1957

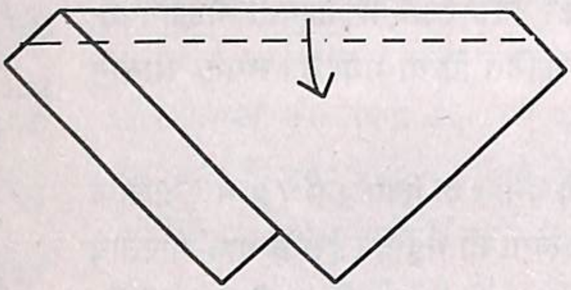
उड़ता ताज



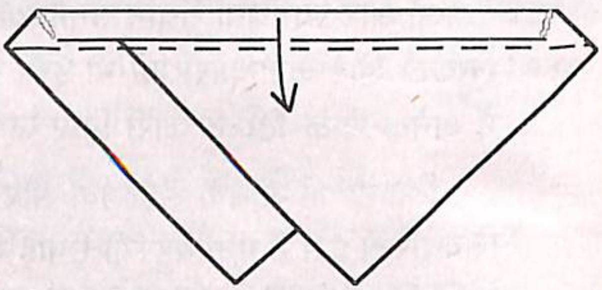
1. एक कागज़ लो – लगभग 30 से.मी. लम्बा और 20 से.मी. चौड़ा। कोरा कागज़ लेने की ज़रूरत नहीं। इस्तेमाल किया हुआ रद्दी कागज़ भी बढ़िया काम करेगा। इसे टूटी रेखा से मोड़ दो।



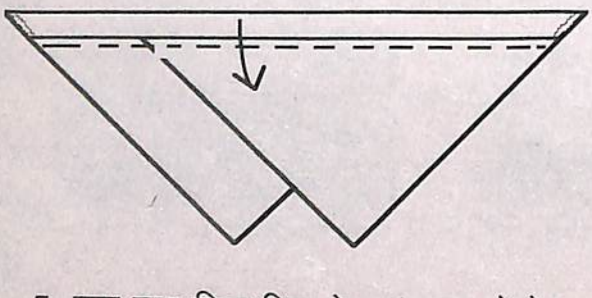
2. ऐसी आकृति मिलेगी। इसे घुमा लो ताकि मोड़ वाला किनारा ऊपर की ओर रहे।



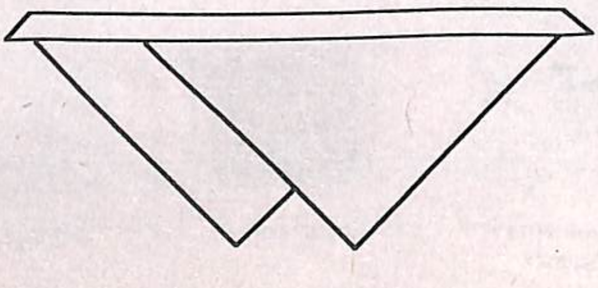
3. ऐसे। अब चित्र में दिखाए टूटी रेखा पर से ऊपरी सिरे को नीचे की ओर मोड़ लो।



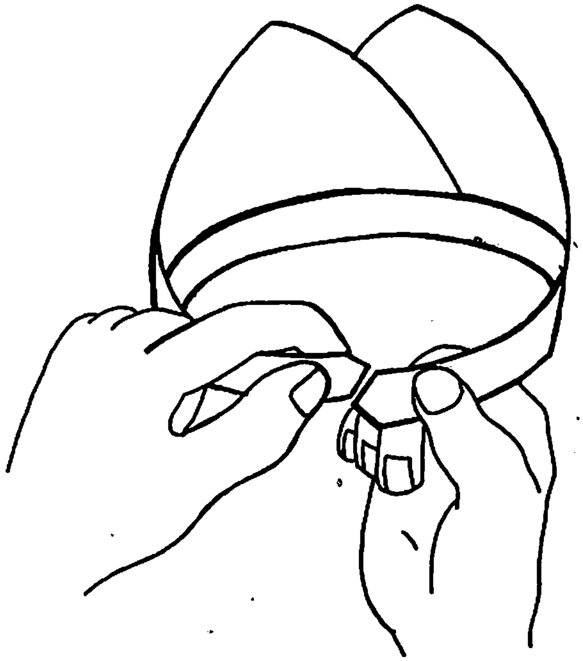
4. क्या आकृति ऐसी बन गई? एक बार फिर नीचे की ओर मोड़ो।



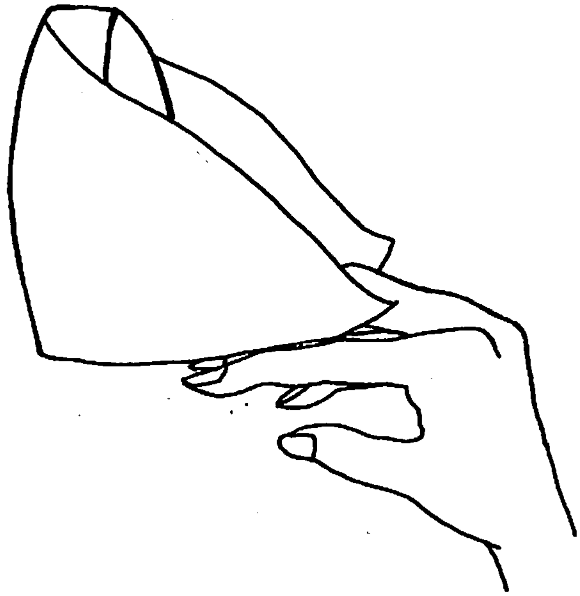
5. एक बार फिर चित्र के अनुसार मोड़ो।



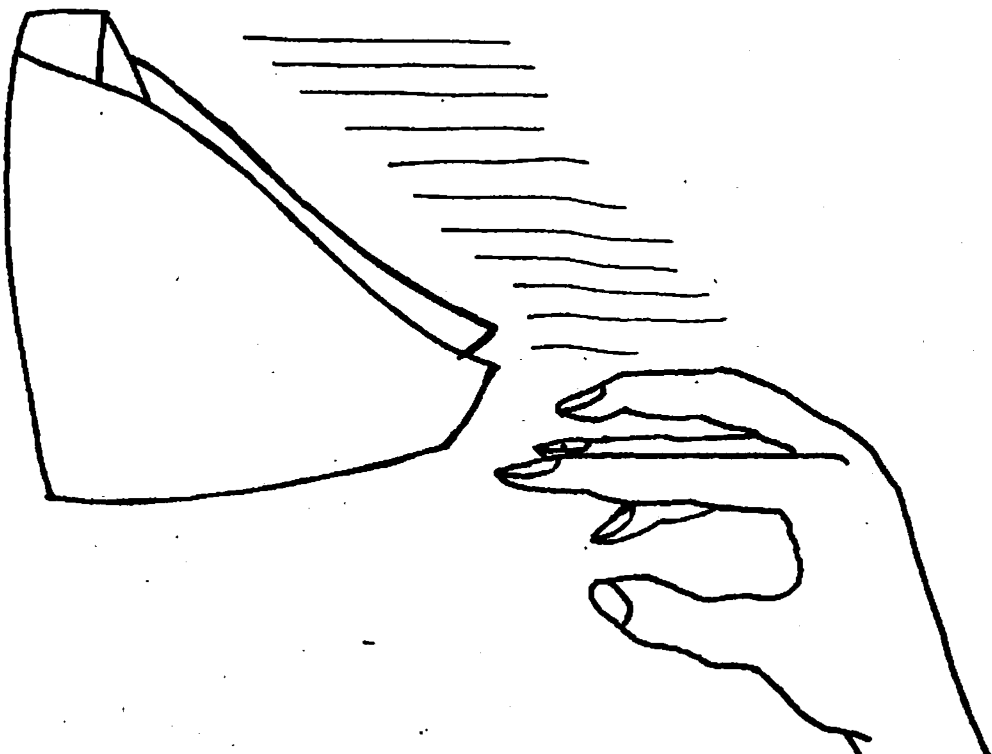
6. अब आकृति ऐसी दिखेगी।

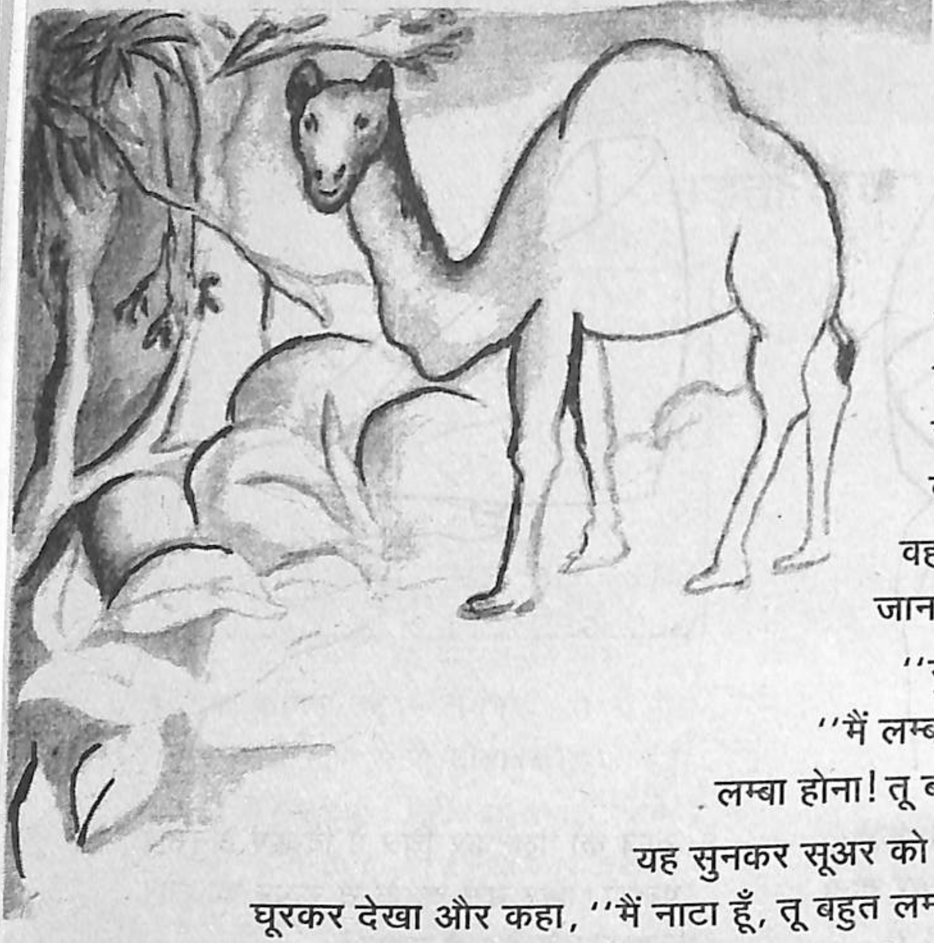


7. इस आकृति को लेकर बार–बार मोड़कर बनाई गई मोटी पट्टी को गोलाई देकर दोनों किनारों को पास लाकर पिन या गोंद से चिपका दो। ताज तैयार है।



8. ताज को पलटकर चित्र में दिखाए अनुसार पकड़ो। फिर उसे झटके से ऊपर की ओर उड़ाओ। कैसी रही उड़ान?





कहानी

ऊँट और सूअर

एक दिन एक ऊँट सड़क पर चला जा रहा था। उसने एक सूअर को देखा। यह पहली बार था जब उसने सूअर को देखा। उसने सूअर को देखा तो उसे हँसी आ गई।

वह समझ नहीं पा रहा था कि एक जानवर इतना नाटा कैसे हो सकता था।

''मुझे देख,'' उसने सूअर से कहा, ''मैं लम्बा और तगड़ा हूँ, कितना अच्छा है लम्बा होना! तू बहुत नाटा है यह दुख की बात है।''

यह सुनकर सूअर को गुस्सा आ गया। उसने ऊँट को घूरकर देखा और कहा, ''मैं नाटा हूँ, तू बहुत लम्बा है, यह दुख की बात है।''

ऊँट ने कहा, ''तू मेरे साथ चल, मैं तुझे दिखाऊँगा कि लम्बा होना कितना अच्छा है, नाटा होना कितना बुरा। मैं जीत जाऊँगा। यदि मैं हार जाऊँगा तो मैं अपनी कूबड़ तुझे दे दूँगा।''

दोनों एक साथ आगे चल पड़े। रास्ते में उन्हें एक बाग दिखाई पड़ा। बाग की चहारदीवारी काफी ऊँची थी, और कोई फाटक नहीं था।

वे अन्दर नहीं जा सके।

बाग में अनेक सुन्दर पेड़-पौधे थे।

ऊँट ने सिर ऊपर उठाकर पेड़-पौधों को देखा। सूअर भी रुक गया।

ऊँट ने सिर बढ़ाकर भर-पेट पत्ते खा लिए।

सूअर पत्तों तक पहुँच नहीं सकता था, इसलिए भूखा ही रह गया।





ऊँट ने हँस कर कहा, ''क्या सोच रहा है, मित्र? क्या तू मेरे जैसा लम्बा होना नहीं चाहता है?''

सूअर ने कहा, ''मैं भी तुझे दिखाऊँगा, कि छोटा होना अच्छा है। चलो, हम आगे बढ़ें।''

वे सड़क पर आगे बढ़ते गए।

जल्दी ही वे एक दूसरे बाग में पहुँचे, जिसकी चहारदीवारी काफी ऊँची थी, लेकिन एक छोटा-सा फाटक था।

सूअर उस फाटक से अन्दर घुस गया, और ताजी और स्वादिष्ट सब्जी खाने लगा।

ऊँट अन्दर नहीं जा पाया।

वह बाहर खड़ा रह गया।

सूअर बाहर आया और कहा, ''क्या सोच रहा है, ऊँट भैया? तू भी छोटा होना चाहता है?''

दोनों साथ बैठ गए, और सोचने लगे।

वे एक दूसरे पर हँसने लगे। दोनों समझ गए कि वे गलत-फहमी में थे।

लम्बू होने में कभी फायदा है, और कभी फायदा नाटू होने में है।

तब ऊँट ने अपना कूबड़ रख लिया, और सूअर ने अपना थूथन अपने पास रख लिया।

● चित्र : संतोष श्रीवास्तव

कहानी – सेंट पॉल प्रकाशन से साभार









पढ़ाई खत्म करने के बाद और बड़ी होने पर वे क्या करना चाहती हैं? देवास की आठवीं में पढ़ रहीं कुछ लड़कियों से इस बारे में बात की गई। कुछ लड़कियों ने अपने मन की बात इस तरह कही . . .

टीचर बनना चाहती हूँ

मुझे पढ़ाई करना और पढ़ाना अच्छा लगता है। और इसलिए मैं टीचर बनना चाहती हूँ। मेरी एक टीचर थी और उन्होंने हमें बहुत अच्छी शिक्षा दी। और मैं यह शिक्षा और भी बच्चों को देना चाहती हूँ। क्योंकि मेरे पापा जी कहते हैं कि ज्ञान बाँटने से बढ़ता है। और जिन्हें मैं पढ़ाऊँगी वह बहुत अच्छे बनें और वे भी दूसरों को ज्ञान दें।

अंजली कुशील

डॉक्टर बनूँगी

मैं डॉक्टर बनना चाहती हूँ क्योंकि डॉक्टर बनके मैं मरीजों की सेवा करूँगी और लँगड़े, अन्धे लोगों से पैसा नहीं लूँगी। और जो गरीब होंगे उनका इलाज बिना पैसे के करूँगी। क्योंकि किसी के पास पैसा नहीं होता है तो वे बीमारी का इलाज नहीं करा पाते हैं। इसलिए मैं डॉक्टर बनूँगी।

पूजा अन्तरसिहे परासिया

मेरा सपना

मेरा यह सपना है कि मैं पढ़-लिखकर किसी बैंक में सर्विस करूँ। मैं अपने पैर पर खड़ी होकर अपने मम्मी-पापा को खिलाऊँ। मेरी मम्मी हर बार यही सोचती है कि मेरी बेटी पढ़-लिखकर कोई भी सर्विस करे। मेरी मम्मी एक प्रायवेट स्कूल में पढ़ाती हैं। उन्हें देखकर मुझे बहुत दुख होता है इसलिए मैं सोचती हूँ कि मैं बड़ी होकर कोई भी सर्विस करूँ।

शिखा शर्मा

पुलिस बनना चाहती हूँ

मैं पुलिस बनना चाहती हूँ। जो गाँव में या सिटी में कुछ झगड़े वगैरह हों मैं उन झगड़ों को सुलझाऊँ।

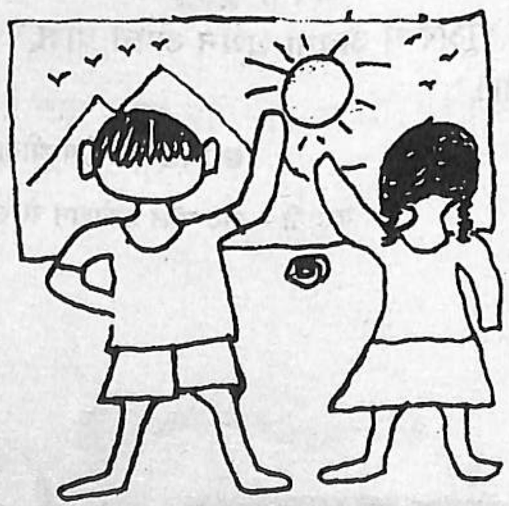
प्रमिला यादव

डॉक्टर बनना चाहती हूँ

मैं डॉक्टर बनना चाहती हूँ। कोई बीमार होगा तो उसे अच्छा करना चाहती हूँ। कोई गरीब होगा तो उसका पहले इलाज करूँगी। मैं बहुत बड़ा अस्पताल बनवाऊँगी। गरीब से कभी पैसे नहीं लूँगी। मैं बाहर जाकर दिमाग की विशेषज्ञ बनना चाहती हूँ। मेरे अस्पताल का नाम मोहित रखना चाहती हूँ। क्योंकि यह नाम मेरे भाई का है। मुझे मेरा भाई बहुत प्यारा है।

मोनिका तेजवानी

♣ ♣ ♣

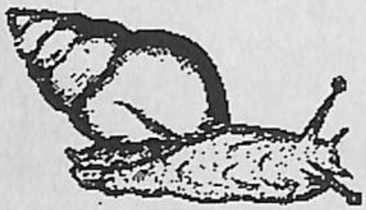


जोड़ घटा का खेल

4	6	13	12	8	15	9
5	1	0	7	6	3	2
14	13	7	5	16	11	4
3	12	6	9	10	17	7
5	9	10	23	20	1	5
7	8	0	1	21	4	10
9	0	6	16	1	18	5

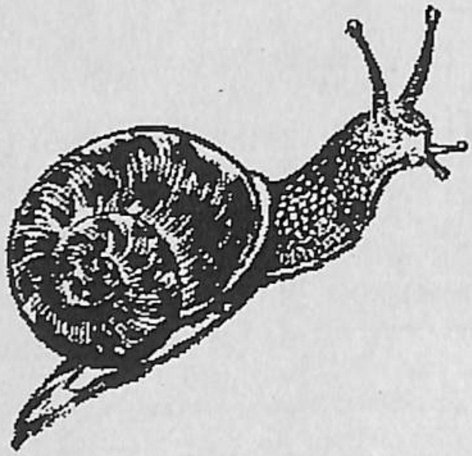
यह खेल दो-तीन या चार दोस्त मिलकर खेल सकते हैं।
अपनी-अपनी कॉपी पर ऐसा चार्ट बनाओ।

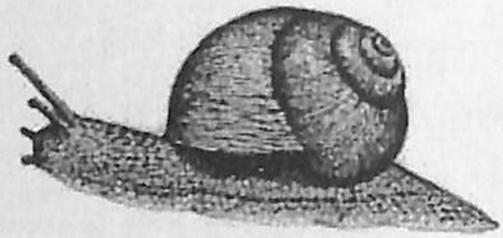
1. दो पासे लो। एक की हर सतह पर 0 से 5 तक के अंक लिख लो।
2. दूसरे पासे की हर सतह पर भी एक-एक करके अंक लिखना है लेकिन इस पर 5 से 10 तक लिखना है।
3. सबसे पहले एक खिलाड़ी को दोनों पासे फेंकना है। उसे यह छूट है कि जो दो अंक आएँ वह उनका जोड़ करे या उन्हें आपस में घटा ले। जो भी करे, उसे जवाब वाली संख्या को चार्ट पर ढूँढना है। और फिर उस संख्या पर कंकड़ रखना है।
4. मान लो तुम्हारे दोनों पासों में अंक आए 5 और 6 तुम चाहो तो इन्हें जोड़ लो। (5 + 6 = 11) या चाहो तो घटा लो (6 -5 = 1) फिर जो संख्या तुम्हें मिली यानी 11 या 1 को चार्ट में ढूँढकर उस पर कंकड़ रखो।
5. इसी तरह दूसरा खिलाड़ी भी चलेगा। और जो संख्या मिलेगी उसे अपनी कॉपी के चार्ट पर ढूँढेगा और उस पर कंकड़ रखेगा।
6. एक बार में एक ही संख्या पर कंकड़ रखना है। एक संख्या पर एक बार कंकड़ रख दिया और दूसरी बार फिर वही संख्या आई तो वह बारी खाली जाएगी। (वैसे तुम अपने खेल के नियम खुद भी बना सकते हो।)
7. जिसका चार्ट पहले भर जाएगा वह जीत जाएगा।



घोंघा

चलता फिरता योद्धा





अगर तुम कभी खेत या कच्ची ज़मीन पर से गुज़रते हुए नीचे देखते रहो; तो कहीं न कहीं तुम्हें घोंघा दिख ही जाएगा। नहीं दिखे तो ताज़ी पत्तियों के नीचे ढूँढो। घोंघा अक्सर यहाँ छिपता है। पर इसे ठण्ड में नहीं ढूँढना। ठण्ड में कहाँ चला जाता है घोंघा? सोचो!

घोंघे के सिर पर डण्डी

क्या तुमने घोंघे के सिर के दोनों ओर एक-एक पतली डण्डी देखी है? इन डण्डियों के सिरे पर ही घोंघे की आँखें होती हैं।



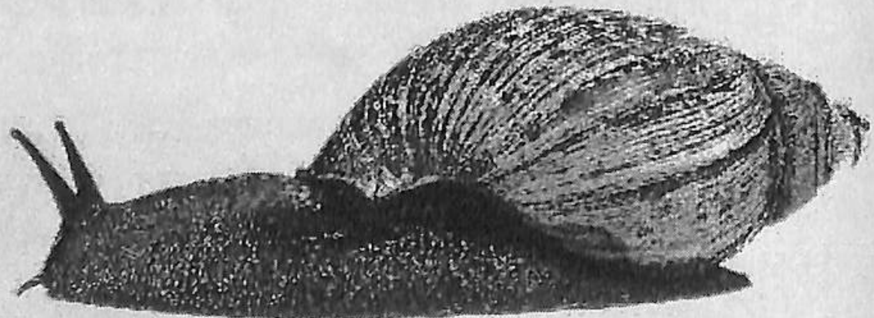
प्रशांत महासागर के द्वीपों में पाए जाने वाले छोटे घोंघे

घोंघे का कवच

घोंघे की पीठ पर एक गोलाकार सख्त-सा ढाँचा भी तुम्हें नज़र आएगा। यह घोंघे का कवच है। घोंघे को धीरे से किसी तीली से



घोंघो के अण्डे खाने वाला घोंघा

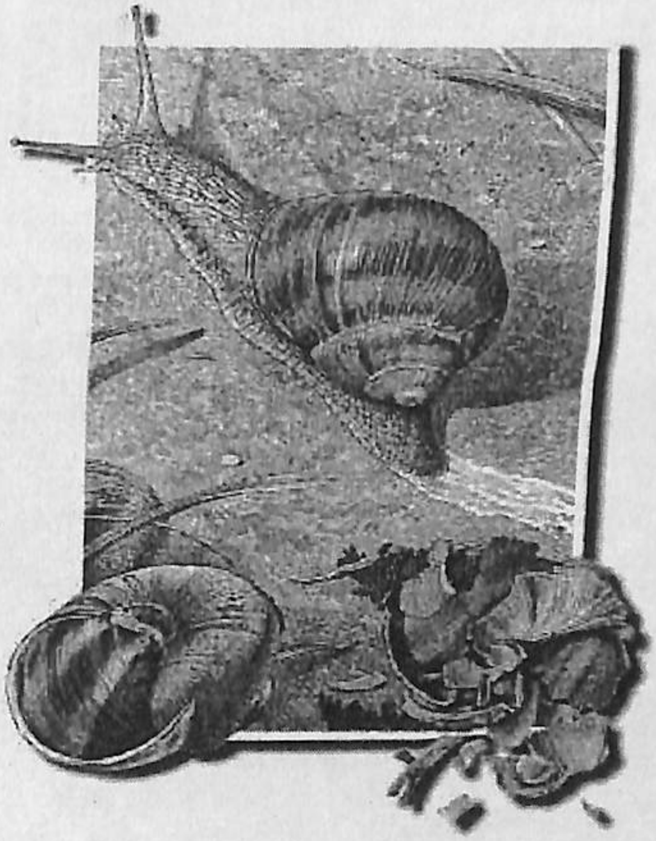


अफ्रीका में पाया जाने वाला दुनिया का सबसे बड़ा घोंघा

छुओ? क्या हुआ? क्या वह सिमट गया? एक बार फिर छुओ वह अपने खोल के अन्दर घुस जाएगा। अब तुम उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

घोंघे की पीठ पर यह खोल उसकी दो तरीके से मदद करता है -

एक तो इसे बन्द करने से लम्बे समय तक सोने पर ठण्ड नहीं लगती और दूसरे, इस तरह शत्रुओं से उसकी रक्षा हो जाती है। सामान्य समय में जब घोंघे को अपना शत्रु, कोई कीड़ा या जानवर दिखता है जो उसे खाना चाहता है, तो वह अपने बचाव के लिए झट से इस घोल में घुस जाता है।



घोंघे की पीठ पर कड़क ढाँचा होता है। यह उसकी रक्षा तो करता ही है साथ ही उसके घर का काम भी करता है।

तुम्हें पेड़ के तनों पर चलते हुए भी घोंघे मिल जाएँगे। एक दिन मैं घोंघे को देखकर सोच में पड़ गई कि इसके न तो हाथ होते हैं न पैर, तो फिर यह पेड़ के तने पर कैसे चलता है? नीचे क्यों नहीं गिर जाता?

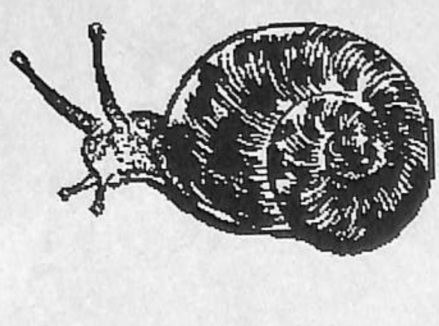
घोंघा पेड़ के तने पर कैसे चलता है?

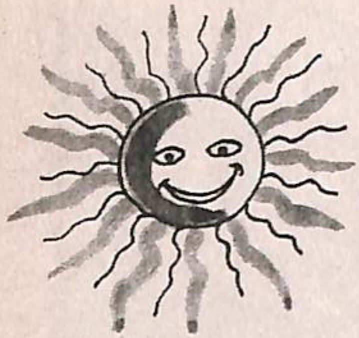
क्या तुम जानते हो ऐसा क्यों होता है? और लोगों से पूछो। वे इसके बारे में क्या सोचते हैं?

असल में पेड़ पर चलते हुए घोंघा एक चिपकने वाला द्रव अपने शरीर से निकालता है। यही द्रव उसे पेड़ के तने के साथ चिपकाए रखता है। ठण्ड के दिनों में घोंघा लम्बी तान के सोता है। कवच के अन्दर घुसकर कवच के खुले मुँह को भी इसी द्रव से बन्द कर लेता है।

घोंघे का खाना

घोंघे ताज़ी हरी पत्तियाँ खाते हैं। अपनी सख्त रेगमाल जैसी जीभ से वह खुरच-खुरचकर पत्ती छीलते और खाते हैं। बार-बार की रगड़ से जीभ पर बने छोटे-छोटे दाँत घिसते रहते हैं, साथ ही ये दाँत धीरे-धीरे बढ़ते भी रहते हैं। और अपनी पत्ती खाने की क्षमता बनाए रखते हैं।









नाना-नानी के नाम

ऊधम करूँ पर रोक न एक,
तनिक किसी की टोक न एक।
झिलमिल करती बाग में घाम
सुबह सुनहरी चहके शाम।
गरमी की ये सभी छुट्टियाँ
नाना-नानी जी के नाम॥



मामी मूर्ख बनाएँ एक,
नानी कथा सुनाएँ एक।
दिनभर गपशप और आराम,
मम्मी जी का बस यह काम।
गरमी की ये सभी छुट्टियाँ
नाना-नानी जी के नाम॥





गरम कचौड़ी सुबह को एक,
दूध जलेबी पहले एक।
थोड़ी जामुन, ज़्यादा आम,
काले-काले पीत ललाम।
गरमी की ये सभी छुट्टियाँ
नाना-नानी जी के नाम॥

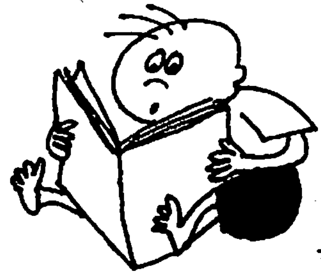


चिढ़ाते रहते मामा एक
फुलस्टाप न कामा एक।
मौसी करती प्यार तमाम,
इन सबको मैं करूँ प्रणाम।
गरमी की ये सभी छुट्टियाँ
नाना-नानी जी के नाम॥



● गोपीचन्द श्रीनागर
● चित्र : कैलाश दुबे

तुम भी लिखो कविता



चित्र : सबीना सभरवाल

कविताएँ कैसे लिखी जाती हैं? और कविता में ऐसा क्या होता है जिससे वह कहानी से अलग लगने लगती है। भोपाल के कुछ बच्चों ने श्रीप्रसाद जी से इस विषय में बातचीत की।

श्रीप्रसाद जी एक जाने माने लेखक हैं। उन्होंने बच्चों के लिए बहुत सारी कविताएँ लिखी हैं। उनकी लिखी कई कविताएँ तुम चकमक में पढ़ चुके हो।

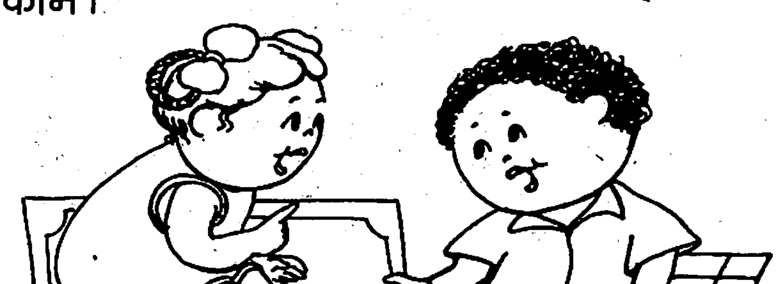
एक कार्यशाला के दौरान बच्चों ने मिलकर एक कविता लिखी। फिर उसे कविता को श्रीप्रसाद जी ने सुधारा। तुम भी पढ़ो और कविता लिखने की कोशिश करो।

बच्चों ने अपने स्कूल पर एक कविता लिखी –

मेरा स्कूल बड़ा ही प्यारा
यहाँ सभी अध्यापक हैं अच्छे।
उन्हें चाहते हम सब बच्चे
हमें सिखाते बातें अच्छी।
ज्ञान सरोवर ये कहलाते
हमको लगते है ये प्यारे।
आठ बजे हम सब आते हैं
दोपहर में घर को जाते हैं।
लंच सभी हम करते हैं
और पेट हम भरते हैं।
विद्यालय का अच्छा नाम
हमको करना पूरा काम।

इसको श्रीप्रसाद जी ने कुछ इस तरह लिखा –

ज्ञानोदय शिशु शिविर हमारा
विद्यालय है कितना प्यारा।
मैडम, अध्यापक, सब अच्छे
उन्हें चाहते सारे बच्चे।
हमें सिखाते बातें अच्छी
हमें सिखाते बातें सच्ची।
आठ बजे हम सब आते हैं
फिर दोपहर को घर जाते हैं।
लंच सभी हम मिलकर करते
पेट इस तरह अपना भरते।
विद्यालय का अच्छा नाम
हमको करना पूरा काम।



चित्र : माधुरी पुरंदरे

नाना का घर – जादू मंतर

●मोहम्मद अरशद खान



''कल मैं नाना के घर गया था। पूछो कैसे?'' अब्दुल अपने साथियों को इकट्ठा करके मौज-मस्ती कर रहा था।

''बस से?''

''उहूँ।''

''जीप से?''

''उहूँ।''

''पापा के स्कूटर से?''

''उहूँ।''

''तो फिर....?''

''पैदल? साथियों ने कँधे उचकाकर एक-दूसरे की ओर आश्चर्य से देखा।''

''हाँ, और जब मैं गाँव पहुँचा तो नाना खेत पर थे। मैं सीधा खेत पर जा पहुँचा। वहाँ देखा, नाना ट्रैक्टर पर दो आलू लदवाकर वापस लौट रहे हैं।''

''सिर्फ दो आलू!''

''पूरी बात तो सुनो। आलू कितने बड़े थे? ए.... इतने-इतने,'' अब्दुल ने दोनों हाथ फैला दिए, ''इससे भी बड़े।''

''इतने बड़े....!''

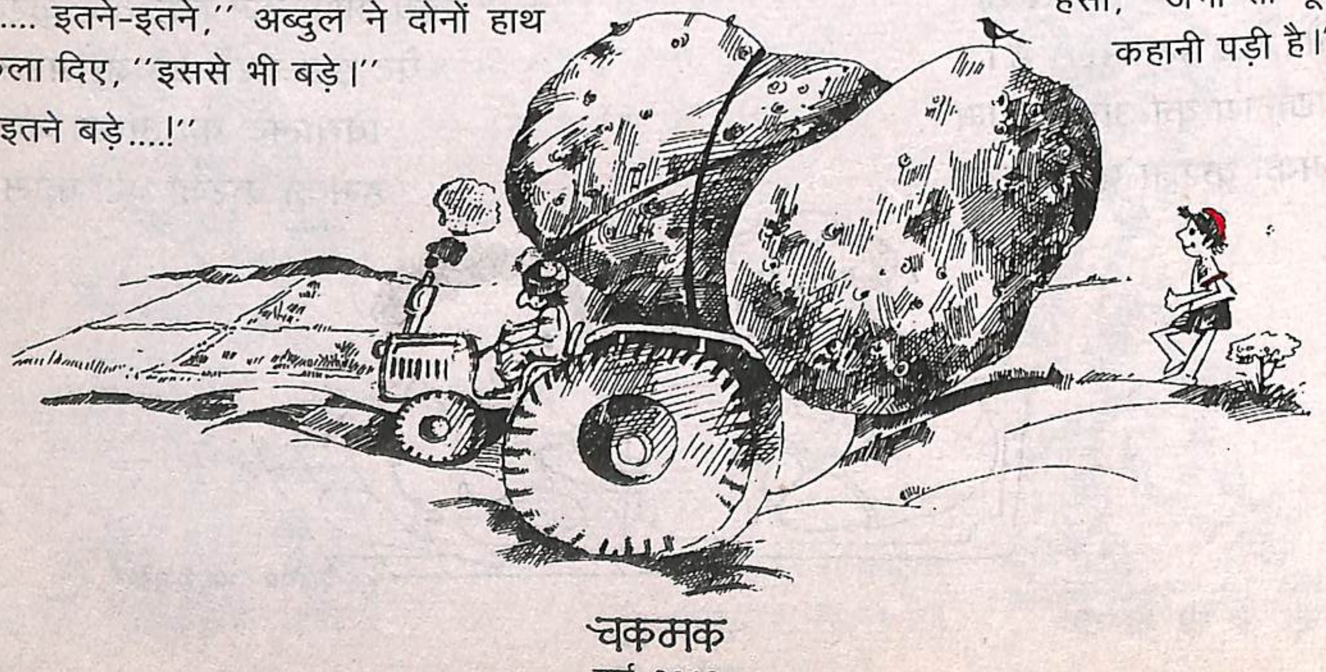
''और नहीं तो क्या। नाना के गाँव में इतने बड़े आलू होते हैं।''

साथियों ने फिर कँधे उचकाए, ''अच्छा, फिर....''

''फिर हम लोग ट्रैक्टर पर बैठकर घर आ गए। नाना मज़दूरों का हिसाब करने लगे और मुझे अपने बैठक के कमरे में भेज दिया। अह... हा.. कमरा क्या था, पूरी जन्नत थी। चारों तरफ फलदार पेड़। डालों पर चहचहाते रंगीन पक्षी। शीशे जैसा साफ सरोवर। तैरते हंस। खिले हुए कमल। हर तरफ फैली फूलों की खुशबू.....''

''इतना सब एक कमरे में?'' साथी चौंक गए।

''बस... इतने में ही चौंक गए,'' अब्दुल हँसा, ''अभी तो पूरी कहानी पड़ी है।''



लम्बी साँस लेकर अब्दुल फिर शुरू हुआ, ''उस कमरे में ज़्यादा देर तक नहीं बैठा। मुझे तो मामा के लड़कों, गोलू-टोलू से मिलने की जल्दी थी। गोलू एकदम गोलमटोल गुब्बारे-सा और टोलू लम्बा-पतला ताड़-सा। माली बाबा से पूछा तो पता चला दोनों अगले कमरे में सूखी लकड़ियाँ लाने गए हैं।''

आश्चर्य का स्थान अब जिज्ञासा ने ले लिया था। सारे साथी खामोशी से अब्दुल की बातें सुन रहे थे।

''मैं झटपट उनके कमरे में जा पहुँचा। देखा तो, घना जंगल। घुप्प अँधेरा। चीं-चीं – चर्र-चर्र। पतंगों की आवाज़ें।

जानवरों की गुर्राहट। मुझे तो डर लगने लगा। ज़ोर से पुकारा, 'गोलू-टोलू!' आवाज़ सुनकर पक्षी फड़फड़ाकर उड़े। सामने की झाड़ी में सर्र से कुछ भागा। मैं और घबराया। इस बार ज़ोर से पुकारा। अबकी दूर कहीं से आवाज़ आई, 'हम यहाँ हैं, भीखम के पास।'



भीखम एक पुराना बरगद का पेड़ था, जो वहाँ से करीब दो किलोमीटर दूर था। मैं सोच में पड़ गया कि वहाँ कैसे पहुँचा जाए। घना जंगल। अनजान रास्ता। जंगली जानवरों का डर। तभी अँधेरे में छोटे कद का एक घोड़ा दिखाई दिया। मुझे मन माँगी मुराद मिल गई। झटपट घोड़े पर चढ़ा और चल पड़ा। इतनी तेज़ रफ्तार कि पूछो मत। दो मिनट में गोलू-टोलू के पास।

मुझे देखकर वे बोले! 'बड़े बहादुर हो तुम।' मैंने कहा, 'इसमें बहादुरी की क्या बात?' वे हँसकर बोले, 'शेर की सवारी जो करके आए हो!' मैं तो घोड़ा समझ रहा था। मेरी हालत पतली हो गई। मैं थर-थर काँपने लगा।

अब्दुल ने डरने और काँपने का ऐसा अभिनय किया कि सारे साथी खिलखिला पड़े।

''मैंने गोलू-टोलू से कहा, ''यार, तुम लोग यहाँ क्यों आते हो? सूखी लकड़ियाँ किनारे से नहीं ले सकते? वे हँसे, 'लकड़ियाँ लेने कौन आता है।

वह तो एक बहाना है। हम तो अंगूर खाने आए हैं। बस, टोलू चढ़ गया पेड़ पर। खूब बड़ा-सा अंगूर तोड़कर नीचे आया और डालों में दबाकर निचोड़ा तो रस के पनारे बहने लगे। हम तीनों ने भर पेट रस पिया और बचाखुचा जेब में रखकर चल पड़े।

सभी साथी खामोश थे। बस, उनकी पुतलियाँ आश्चर्य से फेल-सिकुड़ रही थीं।

''अब हम तीनों मामा-मामी के पास उनके कमरे में पहुँचे।

उस समय वे चाय पी रहे थे। हमें देखकर बोले, 'अरे, तुम्हारे जेबों में क्या है? हमने जेबों पर हाथ मारा तो भनभनाकर सैकड़ों मक्खियाँ उड़ीं। जिनसे सारा कमरा भर गया। देखा तो रस का कहीं अता-पता न था, उसकी जगह जेबों में मक्खियों के झुण्ड भर गए थे। जब हम नहा-धोकर वापस आए तो मामी ने खाना लगा दिया था। खा-पीकर हमने अपनी चारपाइयाँ एक पेड़ के नीचे डाल दीं। वह पेड़ जानते हो किस चीज़ का था?'' अब्दुल ने साथियों की ओर देखा।

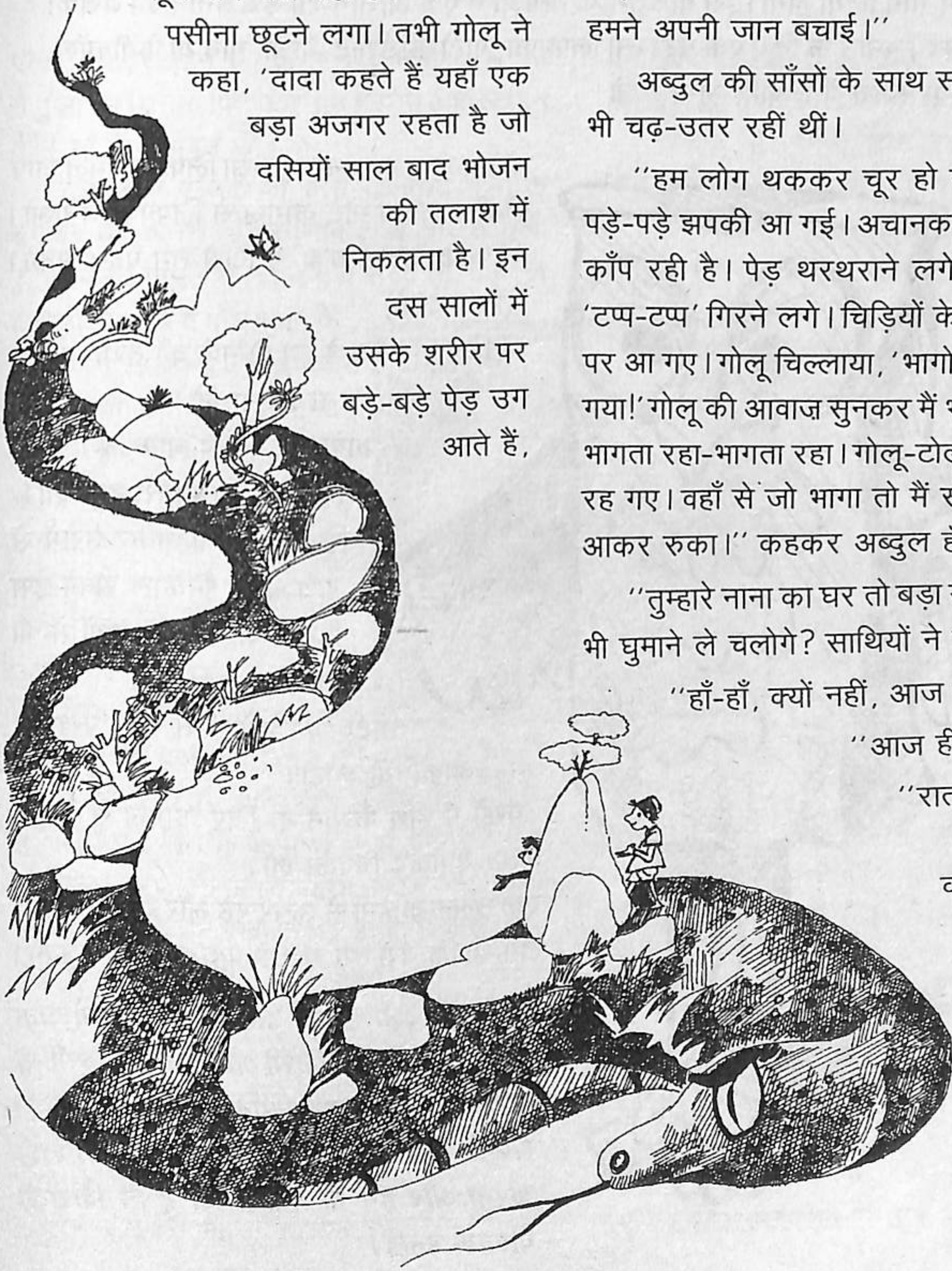
साथी ठोढ़ी पर हथेलियाँ टिकाए चुपचाप बैठे रहे। न हाँ कहा, न ना कहा।

अब्दुल ने खुद ही उत्तर दिया, ''सरसों का। इतना बड़ा, इतना बड़ा कि उसकी चोटी आसमान को छू रही थी। टोलू ने बताया, 'हम लोग सावन में इसकी डाल पर झूला डालते हैं और पूरी दुनिया का नज़ारा लेते हैं। हमने यहीं से एफिल टावर, स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी, गीज़ा का पिरामिड सब देखा है।' हम बातें कर रहे थे कि तभी मामी आईं और एक कमरे की ओर इशारा करते हुए बोलीं, 'तुम लोग उस कमरे की तरफ बिल्कुल मत जाना।'

मामी बताकर चली गईं। मेरे दिल में हलचल मच गई। मैं देखना चाहता था कि उस कमरे में क्या है। मेरी ज़िद पर गोलू-टोलू भी तैयार हो गए। हम लोग चुपचाप कमरे में घुस गए। वहाँ का दृश्य बड़ा अजीब था। अजब तरह के पेड़. अनोखे पक्षी। तिरछी-बेडौल चट्टानें। वहाँ का वातावरण देखकर सिहरन-सी होती थी। तभी एक बड़ा-सा बादल का टुकड़ा दिखाई दिया। गोलू चिल्लाया, 'फौरन भागकर छिप जाओ!' हम लोग दौड़कर एक चट्टान के पीछे छिप गए। वह टुकड़ा पास आया तो पता चला कि वह एक बड़ा-सा पक्षी है जो आदमी तक को उठा ले जा सकता है।



हम लोग डर के मारे छिपे रहे। अब हमारी समझ में आया कि मामी ने यहाँ आने के लिए क्यों मना किया था। पक्षी के जाने के बाद ज्यों ही हम चलने को तैयार हुए कि लगा हम सरक रहे हैं। देखा तो आस-पास की चट्टानें, पेड़, घास-फूस सब चल रही हैं। डर के मारे पसीना छूटने लगा। तभी गोलू ने कहा, 'दादा कहते हैं यहाँ एक बड़ा अजगर रहता है जो दसियों साल बाद भोजन की तलाश में निकलता है। इन दस सालों में उसके शरीर पर बड़े-बड़े पेड़ उग आते हैं, बड़ी-बड़ी चट्टानें जम जाती हैं। भोजन पाकर वह फिर से सो जाता है। हम लोग घबरा गए कि अगर कहीं उसने हमें देख लिया तो खैर नहीं। हम लोग फौरन उसकी पूँछ की ओर भागे। भागते रहे-भागते रहे। एक घण्टे-दो घण्टे। पूरे ढाई घण्टे तक दौड़ते रहे। तब कहीं एक घास के मैदान में कूदकर हमने अपनी जान बचाई।''



अब्दुल की साँसों के साथ साथियों की साँसें भी चढ़-उतर रहीं थीं।

''हम लोग थककर चूर हो गए थे। घास में पड़े-पड़े झपकी आ गई। अचानक लगा कि धरती काँप रही है। पेड़ थरथराने लगे। फल टूटकर 'टप्प-टप्प' गिरने लगे। चिड़ियों के घोंसले ज़मीन पर आ गए। गोलू चिल्लाया, 'भागो डाइनासौर आ गया!' गोलू की आवाज़ सुनकर मैं भाग खड़ा हुआ। भागता रहा-भागता रहा। गोलू-टोलू ना जाने कहाँ रह गए। वहाँ से जो भागा तो मैं सीधा अपने घर आकर रुका।'' कहकर अब्दुल हँसने लगा।

''तुम्हारे नाना का घर तो बड़ा मज़ेदार है। हमें भी घुमाने ले चलोगे? साथियों ने पूछा।

''हाँ-हाँ, क्यों नहीं, आज ही चलते हैं।''

''आज ही। वह कैसे?''

''रात को सपने में, और कैसे।''

कहकर अब्दुल हँस पड़ा। उसकी हँसी में साथी भी शामिल हो गए।

चित्र : धनंजय

अपनी पसंद की पोशाक

आजकल सभी स्कूलों में सालाना कार्यक्रम होते हैं। उन्हीं का एक हिस्सा होता है फेंसी ड्रेस। उसमें तरह-तरह के कपड़े पहनकर और सजधजकर भाग लिया जाता है। तुमने भी कभी इस तरह की फेंसी ड्रेस में भाग लिया होगा। इस बार तुम भी बनाओ में एक आसान-सी ड्रेस बनाने का तरीका बता रहे हैं। इसको बनाने के लिए एक बड़ा-सा लिफाफा, मोटी कार्डशीट, कैंची, गोंद या फेवीकॉल, रंगीन पेंसिल या स्केच पेन आदि जुगाड़ लो।



मोटे कागज़ का बना बड़ा-सा लिफाफा मिल जाए तो ठीक वरना मोटे कागज़ से लिफाफा बनाओ। लिफाफा इतना बड़ा हो जिसे तुम पहन सको। (चित्र देखो)

लिफाफे में जुड़े हुए किनारे की तरफ आँखों के लिए दो छेद बना लो।

लिफाफे पर आँख-नाक बनाने के लिए थोड़ी चित्रकारी कर लो।

लिफाफे को पहनकर उसमें से हाथ बाहर निकाल सको इस हिसाब से दोनों बाजुओं में भी छेद बना लो।

मोटी कार्डशीट से दो पंखनुमा आकृतियाँ काटो।

पंखों में हाथ फँसाने के लिए कागज़ से दो-दो छल्ले बनाकर चिपका लो।

एक छल्ला कोहनी से ऊपर रहे और दूसरे को ऐसे लगाओ कि उसे तुम हाथ से पकड़कर रख सको।

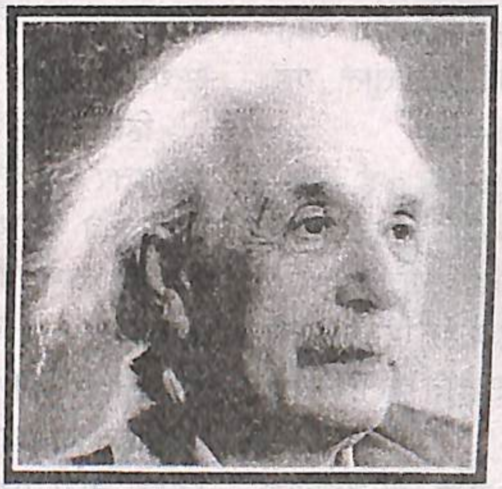
यहाँ बड़ी-बड़ी आँखों वाले उल्लू की पोशाक दिखाई गई है। तुम किसी और पक्षी या किसी भी जीव की पोशाक इस तरीके से बना सकते हो। अपनी मनपसंद पोशाक बनाने की कोशिश करना और हमें भी बताना कि तुमने किसकी पोशाक बनाई।

एल्बर्ट आइंस्टाइन

7 नवम्बर, 1919 की बात है, लंदन से प्रकाशित होने वाले अखबार 'द टाइम्स' ने एक खबर छापी। खबर का शीर्षक था ''विज्ञान के क्षेत्र में क्रांति''। इस खबर में एक वैज्ञानिक के क्रांतिकारी सिद्धान्तों की चर्चा थी। इस वैज्ञानिक को लोग 'विश्व इतिहास की एक नई महान हस्ती' कहने लगे थे.... बात आगे चलकर सही साबित हुई... यह वैज्ञानिक दुनिया का महानतम वैज्ञानिक बना 'एल्बर्ट आइंस्टाइन'।

एल्बर्ट आइंस्टाइन का जन्म 14 मार्च, 1879 में हुआ था। उनके पिता का नाम हरमन आइंस्टाइन और माँ पाउलाइन थीं।

बचपन में एल्बर्ट की रुचि खेलकूद में न के बराबर थी। वे बड़े शांत स्वभाव के थे और अकेला रहना पसंद करते थे। लेकिन वे सुस्त तो बिल्कुल ही नहीं थे। जब वे पाँच साल के थे तो उन्होंने अपनी अध्यापिका को किसी बात पर कुर्सी दे मारी। और इस तरह उनकी पढ़ाई उन दिनों छूट गई। एल्बर्ट की माँ पियानो बजाने में माहिर थीं। यहीं से एल्बर्ट को संगीत का शौक हुआ, और एल्बर्ट ने पियानो बजाना सीखा।



विज्ञान और गणित एल्बर्ट के दो सबसे पसंदीदा विषय थे। एल्बर्ट के मन में कुछ प्रश्न अक्सर आते, जैसे – अँधेरा क्यों होता है? सूर्य की किरणें किस चीज़ से बनी हैं? एक प्रकाश किरण के साथ यात्रा करने पर कैसा लगेगा? उनके इन सवालों पर उनके शिक्षक और घर वाले हमेशा चुप्पी साध लेते।

1894 में उनके पिता को व्यापार में नुकसान हुआ और आइंस्टाइन परिवार जर्मनी छोड़ इटली चला गया। केवल एल्बर्ट अपनी पढ़ाई पूरी करने के लिए म्यूनिख (जर्मनी) में ही रुके रहे। उन्हें अकेले रहना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था। स्कूल जाने का भी उनका मन नहीं होता। एल्बर्ट को अपनी तेज़ बुद्धि और योग्यता पर बहुत विश्वास था इसलिए कुछ शिक्षक उनसे चिढ़ते थे।

एल्बर्ट भी जर्मनी छोड़कर जाना चाहते थे क्योंकि जर्मनी में उन दिनों सत्रह साल की उम्र में सेना में भरती होना ज़रूरी था। एल्बर्ट को लड़ाई, झगड़ा, मारकाट, युद्ध बिल्कुल नापसंद थे।

एल्बर्ट ने जर्मनी छोड़ दी और स्विट्ज़रलैंड की नागरिकता ले ली। यहीं आराउ नगर के एक स्कूल में दाखिला ले लिया। 1896 में एल्बर्ट को आराउ स्कूल से एक डिप्लोमा मिल गया। जिससे वे प्रौद्योगिकी संस्थान में बिना प्रवेश परीक्षा दिए दाखिला ले सकते थे।

उन्होंने चार साल के एक ऐसे पाठ्यक्रम में दाखिला लिया... जिसकी पढ़ाई के बाद वे माध्यमिक स्तर पर गणित और भौतिकी के अध्यापक बन सकते थे। 1900 में उन्होंने यह परीक्षा अच्छे अंकों से पास की। अब वे स्नातक हो गए थे।

पढ़ाई पूरी करने के बाद एक स्कूल में अध्यापक की नौकरी कर ली। पढ़ाने के साथ-साथ एल्बर्ट ने अपना अनुसंधान सम्बंधी काम जारी रखा।

1901 में उनके शोध-निबंध के लिए ज्यूरिख विश्वविद्यालय ने उन्हें पी.एच.डी. देने से

कल्पना करो, एक तेज़ गति से जा रही रेलगाड़ी में बैठी एक लड़की खाना खा रही है। गाड़ी तेज़ी से एक स्टेशन छोड़ते हुए आगे बढ़ती है। इसी दौरान लड़की ने दो कौर खा लिए। लड़की की नज़र से देखें तो लगेगा, उसने दोनों कौर एक ही जगह बैठकर खाए हैं।
परंतु प्लेटफॉर्म पर खड़े किसी व्यक्ति की नजर से देखें तो वह डिब्बा सामने आने पर उसने लड़की को एक कौर खाते देखा। और दूसरा कौर खाने से पहले रेलगाड़ी कई मीटर आगे निकल चुकी थी। बाहर खड़े व्यक्ति की नज़र से उस लड़की ने दोनों कौर कई मीटर के अंतर से खाए। यहाँ वास्तविक स्थिति कौन बता सकता है? आइंस्टाइन ने बताया कि समस्या देखने की प्रक्रिया में निहित है। कोई घटना कहाँ घटती है, इसका वर्णन करने वाले सिद्धांत में घटना को देखने वाले की स्थिति को शामिल करना पड़ता है।

इंकार कर दिया। 1902 में आखिर आइंस्टाइन को अपनी पसंद का काम मिल गया। उन्हें पेटेंट कार्यालय में तकनीकी विशेषज्ञों की टोली में एक सदस्य की नौकरी मिल गई। स्विस आविष्कारकों द्वारा पेटेंट लेने के लिए जो आवेदन भेजे जाते उनका पंजीकरण और उनकी जाँच-पड़ताल यह टोली करती थी।

इसी समय उनके लिखे लेख कई पत्र-पत्रिकाओं में छपने लगे थे। फिर वो साल आया – '1905 का साल' जिसने उन्हें खूब शोहरत दिलाई। इसी साल में उनको पीएच.डी. मिली। इसी साल उन्होंने विशिष्ट सापेक्षता सिद्धांत वाला निबंध लिखा।

1 अगस्त 1914 को जर्मनी का इंग्लैण्ड और फ्रांस के साथ युद्ध छिड़ गया। उन दिनों वे स्विट्ज़रलैंड के नागरिक थे। फिर भी इस युद्ध ने उन्हें बहुत दुख पहुँचाया। उन्होंने युद्ध के खिलाफ आंदोलन भी किया।

आइंस्टाइन को अपने कामों के लिए कई पुरस्कार व सम्मानों के अलावा 1921 में नोबल पुरस्कार भी मिला।

1940 के दशक में उन्हें खूब संघर्ष करना पड़ा। आइंस्टाइन के कई शांतिवादी साथियों को बंदी बना लिया गया था। और देशद्रोह के अपराध में नाज़ियों ने सज़ा सुनाई। आइंस्टाइन को भी एक जर्मन विरोधी के रुप में देखा जाने लगा था।

आखिर में उन्होंने 1936 में अमेरिका की नागरिकता ग्रहण की और फिर ताउम्र वहीं रहे। अमेरिका में भी उन्हें धमकियाँ मिलती रहीं कि वे राजनीति में भाग लेंगे तो परिणाम भुगतने को भी तैयार रहें। उन दिनों जर्मनी में यहूदियों पर हो रहे अत्याचार से वे बहुत दुखी थे।

हिटलर के शासन में यहूदियों की हालत बद से बदतर हो रही थी। नाज़ियों ने फैसला कर लिया था कि वे दुनिया के सबसे श्रेष्ठ नस्ल हैं और इसलिए सभी गैर-नाज़ियों को मार डाला जाए। आइंस्टाइन व उनके साथी वैज्ञानिकों को यह महसूस हो रहा था कि जर्मनी परमाणु बम बनाने के बहुत करीब पहुँच चुका है। परमाणु बम से उनके द्वारा मचाई जा सकते वाली तबाही को रोकने का उन्हें एक ही रास्ता सूझा – कि अमरीका पहले बम बना ले। इसलिए 1939 में उन्होंने अमेरिकी राष्ट्रपति रुज़वेल्ट को परमाणु बम बनाने की सलाह दी।

सारी उम्र वे अपनी इस गलती से दुखी रहे...'अगर मुझे पता होता कि जर्मनी परमाणु हथियार नहीं बना सकता तो मैं कभी अमेरिका को परमाणु हथियार बनाने की सलाह नहीं देता।''

युद्ध खत्म होते ही एल्बर्ट शांति के अपने पुराने लक्ष्य के लिए काम करने लगे। कई वर्ष तक बीमार रहने के बाद 18 अप्रैल 1955 को एल्बर्ट आइंस्टाइन की मृत्यु हो गई। ♦♦♦♦



जुगनू



सुनाऊँ तुम्हें बात एक रात की
कि वो रात अँधेरी थी बरसात की
चमकने के जुगनू से था एक समाँ
हवा में उड़ें जैसे चिंगारियाँ
पड़ी एक बच्चे की उन पर नज़र
पकड़ ही लिया एक को दौड़कर
चमकदार कीड़ा जो भाया उसे
तो टोपी में झटपट छुपाया उसे
वो चमचम चमकता इधर से उधर
फिरा कोई रस्ता न आया नज़र
तो गमगीन कैदी ने की इल्तजा
कि नन्हें शिकारी मुझे कर रिहा
खुदा के लिए छोड़ दे-छोड़ दे
मेरे कैद के जाल को तोड़ दे
लड़का : करूँगा न आज़ाद उस वक्त तक
कि मैं देख लूँ दिन में तेरी चमक
धुँआ है न शोला न गर्मी न आँच
चमकने की तेरे करूँगा मैं जाँच
जुगनू : चमक मेरी दिन में न पाओगे तुम
उजाले में हो जाएगी वो तो गुम
लड़का : अरे छोटे कीड़े न दे दम मुझे
कि है वाक्फियत अभी कम मुझे
जुगनू : ये कुदरत की जादूगरी है जनाब
कि चमकाए जर्रे को यूँ आफ ताब
सँभलकर चलो आदमी की सी चाल
न अल्हड़पने से करो पायेमाल

● सैयद अली

● चित्र : तरुणदीप गिरधर

1.

* काँच के एक गिलास को पानी से भरो।
* इसमें मुर्गी के एक ताज़े अण्डे को डालो।
* अण्डा पानी में डूब जाता है।
* अब इस पानी में थोड़ा-थोड़ा नमक डालकर पानी को चम्मच से हिलाते रहो।
* देखो क्या होता है।
* नमक मिलाते-मिलाते क्या कोई स्थिति ऐसी आती है जब डूबा हुआ अण्डा गिलास के पेंदे से उठकर तैरने लगे?

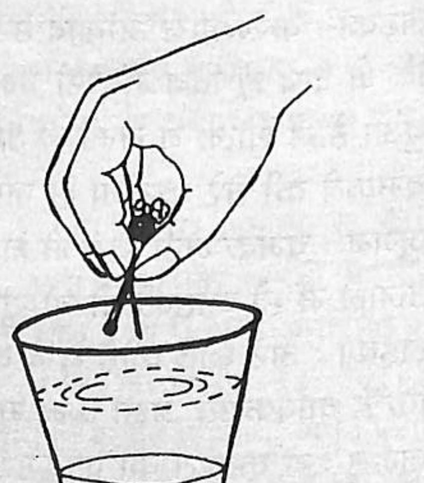




प्रयोग 1

2.

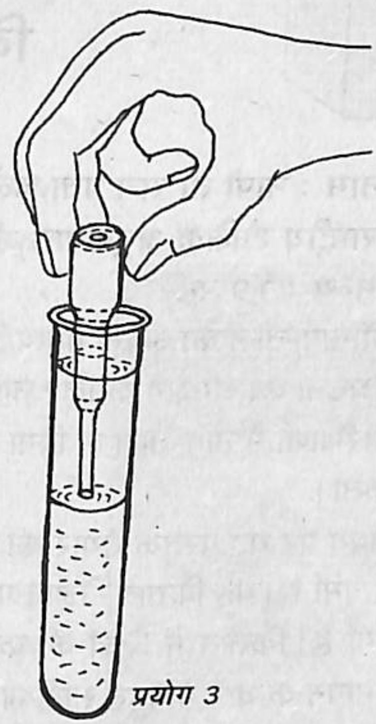
* काँच का एक गिलास लो और इसे आधे से थोड़ा कम पानी से भर लो।
* अब इतना ही मिट्टी का तेल भी गिलास में डालो। गिलास को हिलाओ ताकि पानी और मिट्टी का तेल मिल जाए।
* अच्छी तरह से हिलाने के बाद दो मिनट के लिए गिलास को स्थिर रखकर छोड़ दो।
* तुमने क्या देखा?
* क्या पानी और तेल अलग-अलग हो गए? क्यों?
* अब इसी पानी और मिट्टी के तेल भरे गिलास में ये चीज़ें डालो। आलपिन, माचिस की तीली का टुकड़ा, प्लास्टिक के रंगीन बटन, कागज़ के टुकड़ों की छोटी गोलियाँ, मोम के टुकड़े, चावल या दाल के दाने।
* फिर से गिलास को हिलाकर या चम्मच चलाकर इन चीज़ों को अच्छी तरह मिलाओ।
* अब थोड़ी देर के लिए गिलास को स्थिर छोड़ दो।
* देखो क्या होता है।
* जो कुछ हो रहा है क्या तुम उसका कारण खोज सकते हो?



प्रयोग 2

3.

* एक परखनली या काँच के गिलास में थोड़ा पानी भरो।
* इसमें इतना ही अल्कोहल या स्पिरिट भी डालो।
* तुम देखोगे कि ये दोनों आपस में नहीं मिलते। अल्कोहल पानी पर तैरता है। अगर दोनों तरल पारदर्शी हों तो शायद यह देखना मुश्किल हो। ऐसे में स्याही की एक बूँद डालकर इन्हें रंगीन बनाया जा सकता है।
* अब एक ड्रॉपर की सहायता से दोनों द्रवों के संधि स्थल (जहाँ दोनों द्रव आपस में मिल रहे हैं।) पर एक-दो बूँद सरसों का तेल डालो।
* क्या हुआ?
* क्या सरसों का तेल पानी में डूब गया?
* क्या सरसों का तेल तैरकर अल्कोहल पर आ गया?
* क्या सरसों का तेल संधि स्थल पर ही तैरता रहा?
* तुम्हारे हिसाब से इसका क्या कारण हो सकता है?



प्रयोग 3

प्रयोग संकलन : छाया दुबे
चित्र : आशीष नगरकर

फरवरी, 2002 के माथापच्ची के हल

1.

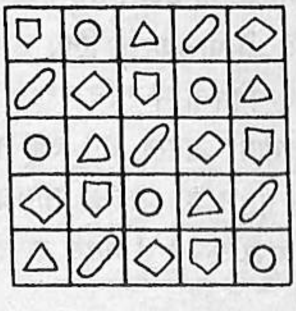
2	1	9
4	3	8
6	5	7

2	7	3
5	4	6
7	1	9

3	2	7
6	5	4
9	8	1

2. करम, बरस, सलाम, पालक, तलक

3.



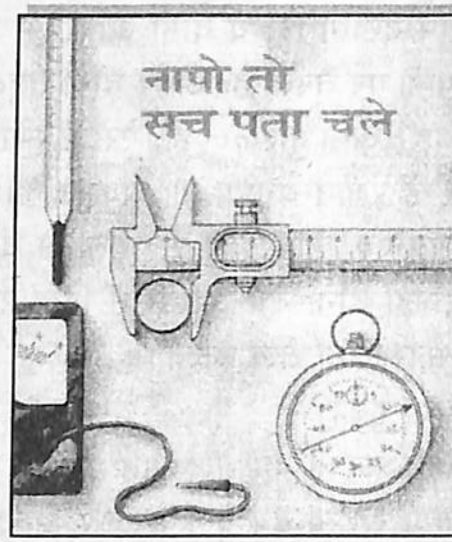
4. कार्ड नम्बर 100 हो सकता है।
5. शेर दरवाज़ा नम्बर 4 के अन्दर है।
6. यह सवाल पिछली बार गलत छप गया था। इस बार दोबारा दिया गया है।

वर्ग पहेली
125 का हल

जु	दा	■	यी	शु	■	मा	शा	■
■	म	न	■	क्र	य	■	खा	का
ख	■	म	जा	■	की	ल	■	र
र	■	■	म	■	न	ग	■	गु
प	ला	श	■	■	■	न	वा	जा
त	■	र	त	■	श	■	■	रि
वा	■	त	ल	■	नि	ब	■	याँ
र	जा	■	ब	री	■	स	न	■
■	ल	ड	■	त	र	■	स	भा

चर्चा किताबों की

किताबों का संसार



किताब का नाम : नापो तो सच पता चले

प्रकाशक : राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद

किताब का मूल्य : 19 रु.

जीवन में नाप-तौल का अपना महत्व है। लेकिन विज्ञान शिक्षण में किसी भी घटना को समझने के लिए नाप-तौल एक ज़रूरी चीज है। प्रयोगों, परीक्षणों में नाप-तौल के बिना किसी नतीजे पर पहुँचना नहीं हो सकता।

इसी विषय पर यह पुस्तक तैयार की गई है। इसके लेखक श्री अजित राम वर्मा हैं। यह किताब विज्ञान पढ़ने और पढ़ाने वालों के लिए उपयोगी है। किताब में चित्रों की कमी थोड़ी खलती है और यह भी कि मापन के बारे में बहुत सारी जानकारी देकर भी किताब इस बारे में चुप रहती है कि मापन किया कैसे जाए!

फिर भी, मापन के बारे में ढेर सारी जानकारी के साथ यह एक उपयोगी किताब है।

किताब का नाम : वास्को द गामा

प्रकाशक : राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद

किताब का मूल्य : 11.50 रु.

यह पुस्तक वास्को द गामा की भारत यात्रा और भारत के लोगों के साथ उसके व्यापार के बारे में है।

इसके लेखक डॉ. राजेंद्र सिंह वत्स हैं। इसमें वास्को द गामा की यात्रा के दौरान रास्ते की घटनाओं का वर्णन पढ़कर मज़ा तो आता ही है, साथ ही जानकारी भी मिलती है। रास्ते में आने वाली जगहों के बारे में भी काफी रोचक जानकारी दी गई है। जैसे –



''चौदह अप्रैल को सूर्यास्त के समय वे मालिंदी जा पहुँचे। मालिंदी मोंबासा से तीस लीग उत्तर की ओर था। वह नगर अफ्रीका के पूर्वी तट पर बसा हुआ नगर था। तथा वहाँ के निवासियों के घर बड़े-बड़े बने हुए थे। उनमें हवा और रोशनी के लिए अनेक खिड़कियाँ बनी हुई थीं। नगर के चारों ओर ताड़ों के कुंज थे तथा ज्वार और सब्ज़ियाँ अच्छी मात्रा में उगाई जाती थीं।''

इस तरह के कई हिस्से हैं जिनमें यात्रा का वर्णन बहुत अच्छे से किया गया है। वैसे तो यह पुस्तक किसी भी पाठक के लिए उपयोगी हो सकती है लेकिन सामाजिक विज्ञान के विषयों में रुचि रखने वालों के लिए विशेष उपयोगी है। इसकी भाषा सरल है। स्कूल की पाठ्यपुस्तकों के अलावा बच्चों के लिए पढ़ने को अच्छी सामग्री की ज़रूरत है। यह पुस्तक इस ज़रूरत को पूरा करने में मदद करती है।

किताब का नाम : पीपलवासी भूत और अन्य नाटक
प्रकाशक : चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली
किताब का मूल्य : 22 रु.

इस किताब में पाँच नाटकों का संकलन है। ये नाटक चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित हिन्दी बाल-साहित्य लेखक प्रतियोगिता में पुरस्कृत किए गए थे।

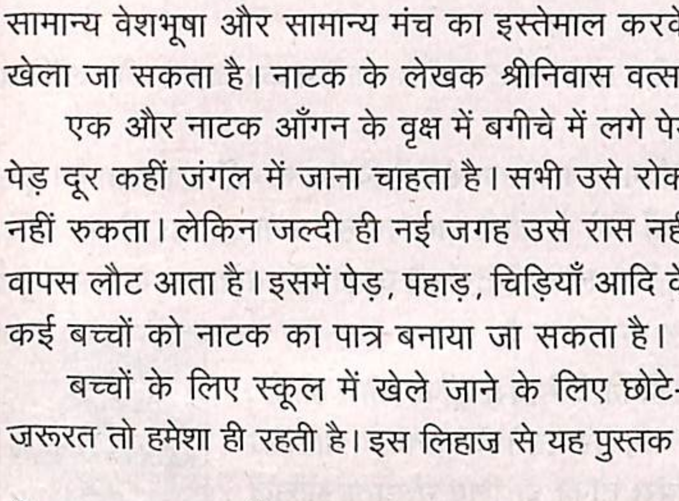


पीपलवासी भूत नाटक में बच्चे स्कूल न जाने के लिए एक नया बहाना ढूँढते हैं। बच्चे भूत लगने का बहाना बनाते हैं लेकिन पकड़े जाते हैं। सामान्य वेशभूषा और सामान्य मंच का इस्तेमाल करके इस नाटक को खेला जा सकता है। नाटक के लेखक श्रीनिवास वत्स हैं।

एक और नाटक आँगन के वृक्ष में बगीचे में लगे पेड़ों में से आम का पेड़ दूर कहीं जंगल में जाना चाहता है। सभी उसे रोकते हैं लेकिन वह नहीं रुकता। लेकिन जल्दी ही नई जगह उसे रास नहीं आती और वह वापस लौट आता है। इसमें पेड़, पहाड़, चिड़ियाँ आदि के मुखौटे बनाकर कई बच्चों को नाटक का पात्र बनाया जा सकता है।

बच्चों के लिए स्कूल में खेले जाने के लिए छोटे-छोटे नाटकों की ज़रूरत तो हमेशा ही रहती है। इस लिहाज से यह पुस्तक उपयोगी है।

किताब का नाम : पूँछ
प्रकाशक : नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली
किताब का मूल्य : 8 रु.



संसार में कई तरह के जीव जन्तु हैं और उनकी अलग-अलग तरह की पूँछें होती हैं। इस किताब में पूँछों के बारे में बहुत रोचक जानकारी दी गई है। सबसे अच्छी बात यह है कि इस किताब के चित्र ही आधी से ज़्यादा बात कह देते हैं। विभिन्न जीवों की पूँछों के बारे में सुन्दर चित्रों के साथ जानकारी मिले इससे अच्छी बात और क्या हो सकती है।

किताब की सामग्री तैयार की है हाइड्रोसे आलुवा ने और चित्रकार हैं अतनु राय।

(एकलव्य के बाल संदर्भ पुस्तकालय से)

ये किताबें ढूँढकर पढ़ना। और इनमें दी गई जानकारी तुम्हारे काम आएगी। पढ़ने के बाद तुम्हारी अपनी जो भी राय हो इन किताबों के बारे में उसे लेखक या प्रकाशक तक पहुँचाना। तभी तो और अच्छी-अच्छी किताबें तैयार होंगी।



खेल समाचार

शीतकालीन ओलम्पिक खेल :

अमेरिका के सॉल्ट लेक सिटी में शीतकालीन ओलम्पिक खेल शुरू हो गए हैं। इन खेलों में 77 देशों के तरकरीबन ढाई हज़ार एथलीट भाग ले रहे हैं। ओलम्पिक खेलों की तरह ये खेल भी चार साल में एक बार होते हैं। भारत की ओर से इस बार सिर्फ एक एथलीट ने भाग लिया। ये हैं दिल्ली के केशवन। केशवन स्कीइंग ल्यूज प्रतियोगिता में भाग लेंगे।

इन खेलों का पहला स्वर्ण पदक इटली की बेलमांडो ने जीता। स्पर्धा थी 15 किलोमीटर फ्री स्टाइल क्रॉस कंट्री दौड़। बेलमांडो ने यह दौड़ महज़ 39 मिनिट 54.4 सेकेंड में पूरी की।

सिर्फ 3 मिनिट 57 सेकेंड में तीन हज़ार मीटर स्पीड स्केटिंग कर जर्मनी की क्लॉडिया ने नया विश्व रिकार्ड बनाया।

शीतकालीन ओलम्पिक भी डोपिंग (दवाओं का सेवन) विवाद से नहीं बच सका है। कुछ खिलाड़ी प्रदर्शन वर्धक दवाइयाँ लेने के दोषी पाए गए हैं। अभी इस पर विवाद जारी है। अंतर्राष्ट्रीय ओलम्पिक कमेटी ने रूस स्केटरों की जोड़ी और बेलारूस के दल प्रमुख दोनों को प्रतियोगिता से बाहर कर दिया है ।

SALT LAKE 2002

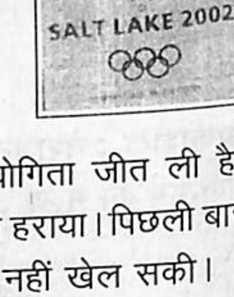
हॉकी : इंग्लैंड ने दक्षिण कोरिया को हराकर महिला हॉकी चैम्पियंस ट्रॉफी जीत ली है। भारतीय टीम तीसरे स्थान पर रही। तीसरे स्थान पर रहने के बावजूद भारतीय टीम ने इसी साल अगस्त में होने वाली चैम्पियंस ट्रॉफी के लिए योग्यता हासिल कर लिया है।

क्रिकेट : ऑस्ट्रेलिया की टीम ने जूनियर विश्वकप क्रिकेट प्रतियोगिता जीत ली है। ऑस्ट्रेलियाई टीम ने फायनल में दक्षिण अफ्रीका की टीम को हराया। पिछली बार की चैम्पियन भारतीय टीम इस बार सेमीफायनल तक भी नहीं खेल सकी।

फुटबाल : कैमरून ने सेनेगल को हराकर अफ्रीकन फुटबॉल चैम्पियनशिप जीत ली है। कैमरून ने पिछले साल भी यह खिताब जीता था। 1965 के बाद यह पहला मौका है जब कोई टीम लगातार दो बार जीती है ।

निशानेबाज़ी : भारतीय निशानेबाज़ अंजली वेदपाठक एक बार फिर चर्चा में हैं। उन्होंने हॉलैण्ड में हुई शूट डेन हॉग प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीता है। अंजली सिडनी ओलम्पिक में फायनल तक पहुँची थीं।

एथलेटिक्स : भोपाल में हुई अखिल भारतीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता में कई नए रिकॉर्ड बने। विनीता त्रिपाठी ने 100 मीटर की दौड़ सिर्फ 12 सेकेंड में पूरी करके स्वर्ण पदक जीता। गुरमीत कौर ने 38.06 मीटर भाला फेंककर स्वर्ण पदक जीता। वे ओलम्पिक खेलों में भी भारत का प्रतिनिधित्व कर चुकी हैं। पुरुषों की 100 मीटर दौड़ में जयचंद्रन ने 10.9 सेकेंड का समय लिया और स्वर्ण पदक जीता। इस प्रतियोगिता में कुल 110 एथलीटों ने भाग लिया।



गुरमीत कौर

एकलव्य के नए प्रकाशन



1. भूलभुलैयाँ
रास्ता खोजो पहेलियों का एक संग्रह : मूल्य 5 रु.

2. दर्पण से बूझो
दर्पण से बनने वाली आकृतियों की पहेलियाँ : मूल्य 5 रु.

3. खिलौनों का खज़ाना
सरल-सस्ते खिलौने बनाने की किताब: मूल्य 20 रु.

4. ऋतुओं का स्कूल
चकमक में छपी कविताओं में से चुनकर तैयार किया गया एक संग्रह : मूल्य 15 रु.

5. चीचीबाबा के भाई
युद्ध की बुराई और शांति के गुणों को उजागर करती, श्री डी. पी. सेनगुप्ता की एक कहानी। मूल्य : 20 रु.

6. गणित की गतिविधियाँ
गणित के शिक्षकों और गणित में रुचि रखने वालों के लिए एक बेहतरीन किताब। मूल्य : 75 रु.

7. भारतीय इतिहास के स्त्रोत (प्राचीन काल - भाग 1)
प्रसिद्ध इतिहासकार प्रो. शीरीन रत्नागर और अजय दांडेकर की इतिहास शिक्षण पर एक विशेष पुस्तक। मूल्य : 100 रु.







किताब मँगाने के लिए किताब की कीमत और साथ में रजिस्टर्ड डाक का खर्च 15 रुपए जोड़कर मनीऑर्डर से भेजें।

मनीऑर्डर भेजने के लिए पता

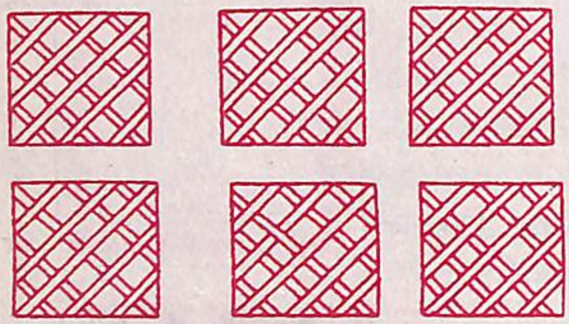
एकलव्य
ई - 7/453 एच. आई. जी.
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल, 462 016 म. प्र.

खोज क्या है? ???
प्रश्नों के उत्तर देना नहीं
बल्कि उत्तरों पर प्रश्न उठाना



माथापच्ची

❶



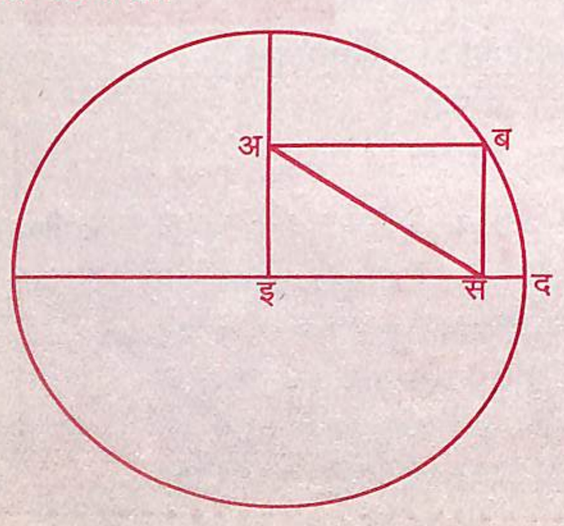
क्या तुम ढूँढ सकते हो, नीचे बने चित्र में छह डिज़ाइनों में से कौन-सी अलग है?

❷

रानी अपनी पुरानी किताबों की छँटाई कर रही थी। उसको एक किताब के कुछ पन्ने मिले। एक शीट यानी चार पन्नों के नम्बर कुछ इस तरह थे 1, 2, 39, 40 एक और शीट थी इसके नम्बर थे – 13, 14, ?, ?
तुम बताओ आखिरी के दो नम्बर क्या होंगे?

❸

नीचे दी गई आकृति को देखो? यह एक वृत्त है। **इ द** इसकी त्रिज्या है, **इ स और अ ब रेखाएँ समानांतर हैं और इ** से लेकर **स** तक इसकी लम्बाई पाँच सेंटीमीटर है। **स** से लेकर **द** की लम्बाई एक सेंटीमीटर है। क्या इन दो बातों के आधार पर **अ** से **स** तक की लम्बाई बता सकते हो?



❹



इस गेंडे को माथापच्ची करने का चस्का लग गया। बड़ी देर से वह धन (+) और बराबर (=) के चिन्ह से उठापटक कर रहा है।

दरअसल सवाल यह है कि इस एक धन और एक बराबर के चिन्ह को इन चार अंकों के बीच ऐसे लगाना है कि इनसे बनने वाला समीकरण गणित के हिसाब से सही हो।

5

आशी और सुनील भाई-बहन हैं, दोनों अपना जन्मदिन 26 सितम्बर को मनाते हैं। हाँ वे जुड़वा भी नहीं हैं। तुम्हारे हिसाब से क्या यह मुमकिन है?

6

$12345679 \times 1 = 12345679$

$12345679 \times 2 = 24691358$

$12345679 \times 3 = 37037037$

$12345679 \times 4 = 49382716$

$12345679 \times 5 = 61728395$

$12345679 \times 6 = 74074074$

$12345679 \times 7 = 86419753$

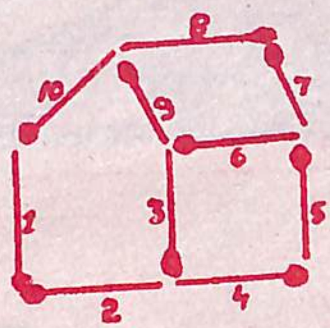
$12345679 \times 8 = 111111111$

क्या ये सभी समीकरण सही हैं ? इन समीकरणों की कम से कम दो खासियतें बताओ ?

7

जुलाई-अगस्त दोनों महीने एक के बाद एक आते हैं। दोनों में 31-31 दिन होते हैं। क्या तुम इसी खासियत वाला महीनों का एक उदाहरण और बता सकते हो?

8



दस तीलियों से यह मकान बना है जिसका दरवाज़ा बाईं ओर है। यह दरवाज़ा तुम्हें दाईं ओर करना है और तुम सिर्फ दो तीलियाँ ही उठा सकते हो। कोशिश करो।

9

सुहेल और सरिता कंचे खेल रहे हैं। सुहेल ने सरिता से कहा कि अगर वो उसे एक कंचा दे दे तो उसके पास भी सुहेल जितने कंचे हो जाएँगे।

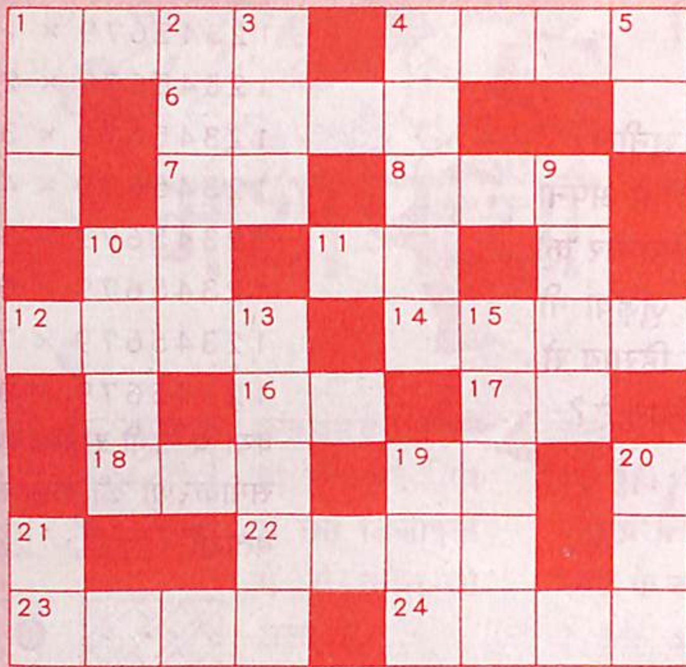
सरिता ने झट जवाब दिया, "और अगर तुम मुझे एक कंचा दे दो तो मेरे पास तुमसे तीन गुने कंचे हो जाएँगे।" क्या तुम बता सकते हो कि दोनों के पास कितने कंचे होंगे?

10

यह बिल्ली का चित्र है। थोड़ा अजीब-सा ज़रूर है पर चित्र तो बिल्ली का ही है। इस तरह तुम और भी कई चित्र बना सकते हो। खैर यह तो एक बात हुई, यहाँ प्रश्न यह है कि इस चित्र में कितने त्रिभुज हैं? गिनो तो ज़रा।



वर्ग पहेली – 127



संकेत : बाएँ से दाएँ

1. अनकचा में है सहसा (4)
4. इस पत्रिका का नाम (4)
6. ओहदे का नाम (4)
7. ..... में क्या रखा है (2)
8. फलक में है पतली लेई या माँड़ (3)
10. घरबार में एक जंगली जानवर (2)
11. पापा के पापा कहो या बड़ा भाई भी (2)
12. नल की टपक में है सेना की टुकड़ी (4)
14. इस्लामी कैलेण्डर का एक महीना (4)
16. हिन्दू मान्यताओं में मौत का देवता (2)
17. ललना में एक अक्षर काटा (2)
18. नया (3)
19. जैसे या ज्यों के लिए उर्दू शब्द (2)
22. मेल लता में है सामंजस्य (4)
23. हिस्से करना (4)
24. दरोमदार में है ताकतवर (4)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. गुलाल का जुड़वा शब्द (3)
2. नापने का बर्तन (5)
3. चमकदमक में है ज़रा सा फासला (3)
4. रोशन हो जो..... (5)
5. आपकी ऊँचाई (2)
9. अक्लमन्द (4)
10. बच्चों का मन (4)
13. आँखों का तारा (5)
15. केरल की भाषा (5)
19. एक रत्न (3)
20. पेंसिल की गलती मैं मिटाती हूँ (3)
21. होंठ (उर्दू) (2)

वर्ग पहेली – 127 का हल चकमक के **मई 2002** अंक में छपेगा। हल भेजने के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से न काटें। संकेतों के नम्बर डालकर शब्द लिखकर भेज दें।

सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक का मई, 2002 का अंक उपहार में भेजा जाएगा।



● अंकित सक्सेना, चौथी, भोपाल, म.प्र.



● नितिन कलम, दसवीं, भोपाल, म.प्र.

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक म.प्र./261/भोपाल/2002



● मेघा कपिल शाह, पांचवी, बड़ोदरा, गुजरात

रेक्स डी. रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिंटर्स से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-7/एच.आई.जी. 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना